MSS No. 732 Subject Gadya Kavya

Name of MSS Shri Gokul Nath Ji Re Vashnamrit

Author

Period Folios 90

Script Devnagiri Source Prof. M. Rakesh, D.A.V. College, Jalandhar

Missing Folios

गोकुल नाथ जी के वचनामृत
अंसं० पत्रक॥ लं० ग० १६ पं० प्र० पृ०

ह० लि०

ह. ग्रं.
732

32

156

श्री गोकुलनाथ के वचनामृत

732

श्रीकृस्नायनमः अथश्रीगोकुलनाथजी।
केवचनाम्रतलिखेते एकसमयपुष्टिमा।
र्गीयसिद्धांत श्रीगोकुलनाथजीश्रीगुसांई
जीसोपुछे तबश्रीगुसांईजीचाचाहरिवंश
जीनागजीभाई आदिभगवदीयकेअर्थेश्री आगे
गोकुलनाथजीप्रति अपुनेपुष्टिमार्गको
सिद्धांतश्रीमुखसोकहे सोसुनिकेचाचा।
वं हरिवंसजीनागजीभाईआदिअंतरंगभगव
दीयअपुनेमनमेबहुतप्रसन्नभए याकेश्री
गोकुलनाथजी अपुनीबैठकमेपधारे श्री
गुसांईजीकेवचनाम्रतकोअनुभवअपुने
मे मनमैंकरतहुते तासमयकल्याणभटजीश्री ○
गोकुलनाथजीकेअंतरंगसेवगसोआयके इतो
श्रीगोकुलनाथजीकोदंडवतकीयेतबश्री
गोकुलनाथजीबोलेनांहीं पुष्टिमार्गीया।
नमकेअनुभवमैंमग्नहते तबकल्याण

भट्टहाथजोरिकेठाढेहोयरहे पाछेचारि
घरिमेंश्रीगोकुलनाथजीउचीदष्टकरिके।
कल्याणभटकीओररहे तबकल्याणभ।
टनेकेरिदंडवतकरी तबश्रीगोकुलनाथ
जीआपश्रीमुखसोंकल्याणभटसोंकहे त
मकबकेआए तबकल्याणभटनेश्रीगो।
कुलनाथजीसोंबीनतीकीनी जोमहारा
जाधिराज चारघरीआएकुंभईहे तबश्री
गोकुलनाथजीप्रसन्नहोयकेश्रीमुखसोंक
हे आजश्रीगुसांईजीआपनेपुष्टिमार्गको।
सिद्धांतमोसोंकहे सोपुष्टिमार्गकीरीतबहु
तकठिनहैंबनतनांही तबकल्यानभटने
श्रीगोकुलनाथजीसोंबिनतीकीनी जोम
हाराजाधिराज कछुहमारेलायकहोय
सोकहोकृपाकरिके हमकोंआपकेश्री
मुखतेंसुनिवेकोमनोरथहैं पुष्टिमार्ग।

कोरीतबननीतोमहाकठिनहै परंतहमको
तोहेननोहूमहाकठिनहैअतिदुर्लभहै य
हवचनसुनिकें श्रीगोकुलनाथजीकल्या
णभटजीकेऊपरबहुतप्रसन्नभए तबश्री
गोकुलनाथजीकल्याणभटजीसोंआज्ञा।
कीएजो यहवातोंओरकेआगेकहिवेकीनां
हीहै तुमभगवद्भक्तहो पुष्टिमार्गकी
रीतसुनिवेमेंअत्यंतप्रीतहै तातेंमेंतुमा।
सोंकहेतहों सोमनलगाकेंसुनियें हृद
यमेंधारणकरीयो अबश्रीगोकुलनाथ
जीभगवद्भक्तकेलक्षण पुष्टिमार्गीय
सिद्धांतकल्याणभटसोंकहेतहें प्रथम
तोजीवकोंआत्मनिवेदनकरनो अन्याश्रय।
महाबाधकहै एकआश्रयश्रीकोकरणा जी
आश्रयसिधतेसर्वकार्यसिधहोतहें यहलो
कपरलोकमेंसबहीकोनसुखपावे यह

कै 4

मिसा

२

नानिकेआश्रयणकश्रीजीँगावे आश्रयकोहेत
यहजोआपुनेप्रभुबिनाओरकाहूकोंनजानें।
ओरहूसेंफलकोमनोरथनकरे अन्याश्रँता व
र कीअपेक्षानराखेतोजीवतथादेवताकी
काहूकोराखे सोबहुतकठिनहे काहेते
यहसंसारहेसोदुःखरूपीहे ओरयहसंसार।
रूपीवृक्षमेदोयफलहे एकसुख। दूसरोदु
ख। येदोयफलयामेलागतहे ओरसाखा।
याहृदकीअनेकहे तिनकीसाखासोमन।
केंतरंगकहियतहे ओसोहृदहेताकोमूल
जडहेसोवुद्धिहे समयपायकेजोयाहृद।
कोकबहूमोहरूपीवयारलागतहे सोव।
हवयारसोयाकेडारा ओरसाखाआपरसा।
चाहतहे फलहेसोअपुनेगिरनकोउरप।
तहे सोयहमोहरूपीवयारकेडरतेडारसा
खाफलपातछूटनतेडरपतहे ओरअपु।

तैमूलवृक्षकीजडहैसोदृढहै ताहूवृक्षकोठा
रनांहीहै सोडारसाखाफलपत्रअपनेमूल।
कोदृढजानतनांही तातेभ्रमतभयकरिकेदुः
खिहोतहै तैसेहीयहजीवकोसंसाररूपीवृक्ष
कोमोहरूपीबयारकोडरहै ताकोभयकरि
केअपनेमूलकोविचारतोजोअपनेमूलतो
भगवानहै तिनकोनांहीजानततातेअपने।
मूलकोभूलिगयोहै यहअविद्याकरिऐसो
विचाररहतनांहीजोयहहमारोमूलभगवान
सर्वोपरदृढहै हमकोमोहरूपीबयारकोचिं
तानांहीहै इतनोबुधिइस्वभावकरिजी।
वकोरहतनांहीहै मोहरूपीबयारकेभयते।
डरपतहै सोयहसंसारमेंअनेकप्रकारकेदुः
खसमूहकोंपावतहै तैसेहीयहमनुष्यकों।
संसाररूपीअहंताममतात्मकवृक्षरूपहै।
डारयाकेकुटंबहै साखायाकेस्त्रीपुत्रपरि।

सि॰ वा॰
३

या
वारे है पञ्चमनंकी देह तथा देह संबंधी के अने
क मनोरथ के तरंग है फल होय दुःख होवे है
मूल याके भगवान है एसे जीवको अविद्याक
रिके मोह रूपी बयार लागत है अपुने चितमे
कहत है जो मैं या बयार ते गिरूंगो यह संसार के
भय करिके अपुने मूल भगवानको भूलिगा।
यो है अपुने कुटंब रूपी डार सों वा पात सों लपा।
टत है इनसों मिलिके अनेक प्रकार के दुःख
सबको अनुभव करत है यह तरु रूपी म
नुष्यको माया रूपी अविद्या लागी है ताते मो
हके बस ते डरपत है जो मेरे कुटंबी सों आ
दिकको दुःख होयगो यह चिंता याको मोह
रूपी बयार के लागेतें होत है अपुने मूल रू
प भगवान इष्ट है सोको कछु लौकिक की
चिंता नाहीं है तहां लौकिक कुटंब मिलिके।
याको अन्याश्रय करावत है सो या प्रकार क

गावतहे लौकिकमेकोईतोकहेसोहमको
ईदेवताकोमनावोतोहमारोदुःखजाय भ
लोहोय तिनकोमिलोतोहमारोकष्टदु
रिहोय कोईकहतहेसोदेवीकोमानता
करोतोभलोहोय यहदुर्बुधीजीवएसेक
रतहे नवुयहजीवअन्याश्रयकरतहे ।
जोंज्योंइनसंसारलौकिकलोगनकोकह्यो
करतहे सोंत्योंश्रीठाकुरजीसोहरिपरत
हे अन्याश्रयकरिके भगवानतेवहिर्मु
खहोतहे सोहरुपीवयारऐसीहेजोजीव
कोभ्रमउपजावतहे औरजेदृढअनन्य
भक्तहे सोअन्याश्रयसर्वथानहीकरतहे
जवकछुलौकिकसुखदुःख देहको।
प्रालब्धहे सोहोनहीहेसोदेहभोगते।
छूटेगोएसीदृढताराखतहे तिनकोदुः
खतत्कालनिवृर्तिहोतहे प्रथमतोभग

8

सिवा
४

वदीयकोकोईदुखहोतहीनांही जोपीछ
लेमालव्यतेहोतहेसोभगवदीयमांनतेना
हीं याप्रकारइष्टआश्रयश्रीठाकुरजीको
करे ताकोभगवदीयकहिये औरजोवै
स्नवहोयकेअन्याश्रयकरतहे औरअस
मर्पितखातहे तासोंश्रीठाकुरजीश्रीआ
चार्यजीमहाप्रभबहुतदूरिरहतहे यह
निश्चयजाननो यहसमझिकेवैस्नवा
कोयहीजोगहे जोअन्याश्रयनकरनो ।
असमर्पितनहींखांनो तातेअवनेमनमे
इष्टआश्रयएकश्रीजीकोहीराखनो त
वेवैस्नवयहलोकपरलोकमेसुखपावे
याप्रकारश्रीगोकुलनाथजीकल्यानभट
प्रतिकहेहे ॥ प्रसंगप्रथम । अबदूस
रोप्रकारश्रीगोकुलनाथजीकल्यानभटप्र
तिकहतहे वैस्नवकोमांगीमोत्रपरहया

रावती सोकैसेदयाराखेक्रंजरतेचेटीपरि
येतहोऊनमेंएकजाने छोटेवडेजीवसव
२ प्रभुकेहै अंतर्जामिसर्वमेंएकहीहै प्रति
विंबन्यारेन्यारेदीसतहै यहभावभगवदी
यजानिकेहिंसातेअत्यंतडरपतहै आप
नकोपतहे आपुनेकोसीतउस्न दुःखसु
खसववमेविचारतेहै काहूकोहूसेकल्या २
वतनांहीवचनमनदेहीतेंसवनकोभला
करतेहै आपुमनवचनदेहितेंन्यारेहै दुः
खसुखसोंरहितहै तातेवैस्नवकहायके।
प्रानीमात्रपरदयाराखे यहहूमरोलक्षण
प्रसंगद्वितिय: २ ॥ अवश्रीगोकुलना
थजीकल्याणभटजीप्रति वैस्नवकेतो।
सरेलक्षणकहतहै जोवैस्नवसदासमस्व
रहै सुखदुःखएकवरावरजाने सुखमे
हर्खितउन्मत्तनहोइ वैस्नवमोदुन्महोइ

सि॰ता॰
५

सीतूराखे अहर्निसश्रीजीकोध्यांनराखे दु
ख्यादिकहुमांगग्रहेसेवाभगवत्सेवावैस्नव
सेवामेंउठावे अपुने सरीरकेभोगार्थनकरे
लौकिकवैदिकमेंआवस्यकहोयसोसंकोच
सहितप्रभुकोदिवायआहाले ताखरचक
रे वैस्नवपासलाजसंकोचछोडिकेजायनि
संकहोयके भगवत्स्मरनवार्त्ताकरे जह
भगवत्वार्त्तामेंसंकोचहोयतहांभगवद्धा
र्मबढेमेंदेहरहेताते संदेहनिवृत्तिहोय
तहांसीनबढे शानहोइ देहअधमीअनि
त्यकस्किजाने काहूकोबुरोनकरे दुःखमें
धीरजधरेताकोउत्तमवैस्नवजांनने यह
तीसरोवैस्नवकोलछ्रन॥ प्रसंगत्रतीया
अबश्रीगोकुलनाथजीकल्यांणभट्टजीप्र
तिवैस्नवकोचौथोलछ्रनकहतहे॥ भगव
दियहोयताकोकोपनकरनो ताकोकार

णायहजोक्रोधहैसोमहाचांडालरूपहै तातें
जहांक्रोधहोतहैतहांभगवदसेवाज्ञानरहितहै
जव क्रोधहोतहै तवक्रोधतेमगरोअंगकंपाय
मानहोतहैक्रोधअग्निरूपहै भगवद्धर्मको
जरावनहारहै जाकोक्रोधबहुतहोयसोक्रो
धावेसमतेअसमर्थरहै जैसेचांडालकेस्पर्शा
तेसचैलस्नानकरनोपरतोउपचारिहै जो
कौ जीवक्रोधवनेतोसचैलस्नानकरे नाहीतो
हाथपांवधोवे श्लो १६ करे चरणांमृत
लेइमननेमेंसांतहोइ तवक्रोधावेसमिटे आ
सुरावेसतेछूटे तातेंभगवदस्मरणपवित्र
होयकेकरे क्रोधावेसमेदेहछूटेतोनर
कमेपडे तथाअधोगतिहोय तामसानां
अधोगतिः औरविनाकारनभगवदसेवामेंव
धीविनाक्रोधकरे तोस्नानकिजोनिकोपावे
लोभकरिकेकाहूकोद्रव्यछुरावतहैपीछेते

सिता
६

क्रोधकरतहे सोसर्पजोनिकोपावतहे कोई
वैस्नवसोईरखाकरिकेभगवत्सेवाभगवद्वा
र्ता भगवद्धर्मकीईनआदिमेप्रतिबंध यक
रिछुडावतहे सोउहक्रूंभीपाकनर्ककोकी
डासाठहजारवर्षपरियंतहोइ पीछेसूक
रकूकरसर्पइत्यादिक योनिकोपावे तातै
भगवद्धर्मसंबंधीवातसाधारणहूहोईता।
सोविघ्ननकरनोनाही औरक्रोधईर्षाकरि
केकाहूकेग्रहकोअ गीलगावतहे सोतो
नेतापकरिकेनरकमेपरतहे ईर्षाक्रोधक
रिकेकाहूकोविविदेतहे तथासहलेअ
पघातकरतहे सोनर्ककोभोगकरिपाछे
सर्पजोनिपावतहैं क्रोधसहितउर्येोचन
आदिजेदानकरतहे तिनकोदसगुणाप्राय
श्चितकरेतसुधहोतहे क्रोधसगुरेधर्मन
मेवाधकमहाउद्वेधीहोइकेअजानतेकर

है

तहे तातेमनलगायक्रोधकोनिवारनसो
तद्रूपीभगवदइच्छाद्रूपोहूतेहूरकरे क्रोध।
करिभीतरतेगुरुकोनिहुलतयागुरुतेकठिन
बोलतहेसो मेयहोयपाछेसर्पहोयपाछे
भूतजोनिपावेपाछेप्रेतजोनिहो मानापि
तासोभगवदर्थविनाक्रोधकरतहे तिन।
कोसगरोसुकृतभगवदधर्मकोनासहोतहे
याप्रकारसोश्रीगोकुलनाथजीनेकल्यान
भटजीसोकहे जोवैस्नवहोयकेसर्वथाक्रो
धनकरे क्रोधकोमहादोसहेकहियेतोपा
रनआवे याप्रकारसोधनहे प्रसंगचतु
र्थः ४ अवपांचमोलछणश्रीगोकुल
नाथजीकल्यानभटसोकहतहे वैस्न
वहोयकेएकटकश्रीभगवानकोआश्रय
हितकारीजान औरभगवदसेवाविशेष
कायहअपनोचितराखे परमस्नेहपूजां

सिद्धा॰
७

ने॰ लौकिकमेमनकीचंचलतानकरे श्री
जीकोमनरूपश्रीभागवतमे पुष्टिमार्गीयग्रं
न थमेकह्योहे तिनहिंकोदर्शनकरिहृदया
मेध्याननराखेजेसेभगवद्नामकोहृदयमे
स्मरणकरतहेजपकरेहे भगवद्करा
दसश्रीभगवन्नामभगणाञ्चापनोमनलगाय
केचिंतनकरे भगवद्नामविनाजोछिन
जायसोहृदयभीतरतेउसासलेमहादुःख
करे अपरसस्नानकरिचरणांमृतश्रीयमु
नाजीकीरेणुकामुखमेमेले दोऊनेत्रन।
सोमाछेपरिहृदयसोलगावे भगवदाग
हृदये नेत्रलगावे अलौकिकरूपहोइ
सोएसेभगवद्धर्ममाछेविराजेहृदयम
हुमेमभजीपधारे भगवद्मेहरमेआ
यभगवद्सेवाछोरिबडीसर्व अपनोभा
ग्यमानिकेकरे काहूकीसेवामेईरस्नान

14

करे ब्रह्मरिपोतनाकरिकारी पाद्यादिक।
मोजभेर मंगलँभोगधरिभिज्यापेरकेसेवा
रे मंगलाआरतीकरे तिथिवारउत्सवदेखि
केअभ्यंगकरावे शृंगारजेसासवकृपरुचिमा
गेकेअनुसाररितुकेअनुसारकरे सेवाशृ
गारसमयविनेकोउदुगसेकल्पविकलन
करे अपराधकोमनमेभयराखे अपुनो
भाग्यमहाप्रभुजीकीकृपातेंइलैभज्योनि
केकरे पलनाराजभोगउत्थापनसेनकरा
य सोंकरनालाहँसामग्रीकीचोकसीराखे
पाछेरात्रिकोवेस्नवहंमिलकेभगवदवा
र्ता कीर्तनआवश्यकरे कोईवेस्नवनमि
लेतोआपुहीपोथीवा लिकेपत
नमार्गीयग्रंथकीटीकाटेखे वैस्नवमंड
लीमेआपुहीजायकेवार्ताकरेसुने ऐसा
सेवामेआलसनकरेदोऊआयतनवभक्ति।

सिद्धा
८

16

बढे भगवदसेवानबनेतोऊवैस्नवसंगना।
छोडे वैस्नवसंगछोडेतोदेवतानछोडे
यामकारश्रीमुखतेकहे ॥ प्रसंगपंचमः
५ ॥ अबश्रीगोकुलनाथजीकल्यानभ
टप्रतिछठोप्रकारकहतहे वैस्नवसेवा
स्मरणभगवदधर्ममेपाखंडरीतनकरे ।
सोबकासुरकीसबवाथमीमेलिखे जल।
भेद मेसुखीनदीकेदृष्टांततेकहेहेसोन
करे काहूकेदिखायवेकेअर्थहूनकरे स
हजअपनोधर्मजाने जेसेब्राह्मणगायत्री
जपेजपयालाभमेंतोविसोकसोकरे एक।
कालोहूकालोवात्रकास्मावाः विनापूजा
सोकरेवायतोनरकमेजाय पाखंडिकी
सेवाकोप्रभुअंगीकारनकरे यामकार।
श्रीगोकुलनाथजीकल्यानभटप्रतिक
हे ॥ प्रसंगषष्टमः ॥ ६ ॥ अबश्री

गोकुलनाथजीकह्यांनेभटप्रतिसातमोप्र
कारकहतहे सोवेस्नवहोयकेकाहूकोअ
परापदेखनोनाही जद्दिपिनेंनतेदेखेका ३
ननसोसुने परेहमनमेरंचकहूनलावे
यहजानेजोमेमायारूपअविद्यामेपस्योहो
सोमोकोदोषदीसतहे इनमेदोषरंचक
हूनाहीहे उत्तमोत्तमदेखेनाही उत्तमदेखा
सुनेनाही मध्यमदेखेकेकहेइहफेंठसो
वेलगायईर्षाकरे कोईखोटोकामकरेअ
परापकरेतोवाकोभूलिजाने वाकोमन
मकरिकेसंकोचछुडावनो भलोकार्यहे
यसोउणकोमप्रकासकरे याप्रकारवेला
तवप्रभुक्रपाकरिकेअपनीभक्तिकोदान
करे याप्रकारश्रीगोकुलनाथजीकह्यांने
भटप्रतिसातमोप्रकारकहे ॥ प्रसंग
समसो ॥ ७ ॥ अबश्रीगोकुलनाथ

मिता· ५

जीकल्याणभट्टप्रतिग्रहसोंलक्षणकहतहे
वैसेवहोयसोसाचोहोइ लौकिकअलौ।
किकमेंकपटनराखे भगवदीयनसोंमि।
थ्यानबोलनो उनकीटहलसेवाकरनी
उनसोंभगवद्चरचाकरनी (उनसोंभग
वद्चरचाकरनी) उनकेहृदयकोभाव
पुष्टिमार्गकोसिद्धांतअपनेहृदयमेंराख
नो वारंवारअपनेमनमेंविचारकरनो।
उनकोमनकाहूवातसोंखेदपावेसोनक
रनो उनतेंसनेहबहुतहीराखनो श्री
ठाकुरजीकीसेवावार्ता लीलाकोमका
रजोनजानतहोइसोटेसहोइके भगवदी
यसोंपूछलेनो अपनीयोग्यतानजाननी
उनभगवदीयनकेआगेवैठिकेमनमिला
यकेगोष्ठीभगवद्वार्ताकरनी। यामका
रयोग्यहेतवभगवदधर्महृदयमेंआवे

तबभगवदीयहोय याप्रकारश्रीगोकुलना
थजीकल्यांनभटप्रतिवेसबकोसिखावहि
ते ॥ प्रसंगअष्टमो ॥ ८ ॥ अब
श्रीगोकुलनाथजीकल्यांनभटप्रतिभग
वदीयकेलक्षणऔरहूंकहतहे जोको
ऊनिंदाऊवचनकहे तिनसोमनमहिरा
हनो ताकोउतरनदेनो आपुनमेंटा
ढजानिउनसोंक्रोधनकरनो औरअपुने
हृदयमेंवैरनांहीकरनो बहुतविरोधहो
यतोउनसोंनेकदूरिरहेनो उनकिकृति
देखिकेदोषबुधिउनमेरंचकहूनांहीक
रनो उनतेजेश्रीकृष्णईतेनांहीनांतोरा
खनो उनकोउपकारआपुसोंबनिआवे
सोप्रसन्नतासोंकरदेनो उनकेसंगखान
पांनकोआहाररंचकहूनांहीकरनो ।
उनकीनिंदाहूनाहीकरेंयाप्रकारवैस्ना

वी

सिद्धा॰ १॰

वके अपराधतेदुख्येताकोसर्वकार्यसिद्धिहो
य अभद्द्याकरिकेहृदयमेपधारे सिंहासह
नीयहसर्वोपरवैस्नवकोपरमधर्महे याप्र
कारश्रीगोकुलनाथजीकल्याणभट्टजीप्रति
सिद्धांतकहे ॥ प्रसंगनवमो ॥ ९ ॥
अबश्रीगोकुलनाथजीकल्याणभट्टप्रतिवै
स्नवकेदसमोलक्षणकहतहे श्रीठाकुर
जीकीसेवाकाहूकेभरोसेनकरनी अपुनेमा
थेसेअस्वरूपतिनकीसेवाआपुहीकरनी।
उत्सवआदिनित्यसमयअन्नसामग्रीआपुनेवि
तसमानवस्त्रआभूषणभांति भांतिकेमनो
रथसमेतहोयसोमस्थिकरनी श्रीठाकु
रजीकीतहांनित्यनौतनउत्सवमंगलजा
निअसक्तरहनो अमंगलउदासीनकबा
हूनरहनो जोसामग्रीजाउत्सवमेअपुने
घरकहांहेसोहीरीतजथासक्तिसौतिसर्वा

ककरनो । जो द्रव्य होय तो श्रीठाकुरजी के ।
कार्यमे कृपनता नाही करनी । और भगव
द्सेवा करिके श्रीठाकुरजी सो कछु लौ
किक मांगनो नाही । यारीत सो निश्काम हो
इके श्रीठाकुरजी की सेवा करनी । और जो
देह होय रोगादिक प्रतिबंध होइ तो अपने स
जाति वैस्नव गाममे न होइ तो ब्राह्मण वैस
व तासी मर्यादा होइ ताको कछु द्रव्या
दिक देकेहू सेवा करवावनी । जो मर्या
दि वैस्नव न होइ । और प्रतिबंध परे तो सम
र्पनी वैस्नव के पास करावनी । और जो सम
र्पनी वैस्नव गाममे न होइ । और भारी प्रतिबं
ध आय परे तो नामधारी वैस्नव सो परवस्त्र
की थैली हाथमे पहिराय श्रीठाकुरजी की से
वा करावनी । साक्षात श्रीठाकुरजी को पर
स न करावनो । वाके हाथ को सखडी श्रीठा

शिक्षा॰ ११

कुरजीअरोगे परंतुआपुनलेइबडोमतिबंध
आयपरेतोलेनो जबमतिबंधछूटेतबएक
हातकेरभेटकाढे तबश्रीठाकुरजीकोघर
मकरे औरअन्यमार्गीयतेश्रीठाकुरजीको
घरमेसेवासर्वथानहीकरावनो नामधारी
हवैस्नवनमिले तोकोरीसांमग्रीआपुहो
घटवस्तुसोधरे श्रीठाकुरजीपोढहीआरो
गे परंतुऔरसोसर्वथानहीकरावनी ।
जोसरीरसर्वथानचलेतोश्रीठाकुरजीकोगा
मकेवैस्नवनयाऔरगामकेवैस्नवहोइ
तिनकेघरपधरावनेमनकरिके तापक
रेजोभगवत्सेवानाहीभई तबमनलगा
यकेमानसीसेवाहीकरनी जाप्रकारसों
पेलीसेवाकरिहेताप्रकारसोंआपुनेमनमे
सेवाकरनी आपुनेमनमेश्रीठाकुरजीको
ध्यानधरिकेश्रीआचार्यजीश्रीगुसांईजी ।

कैंजाबालकसोसमर्पणकीयोहोई श्रीजी
मानस्वरूपयुते गुरुकेसबजोसरूपहोइ ।
तिनकोंअंतःकरणमेनमस्कारकरे तापाछे
मनहीकरिकेमंगलाभोगमंगलाआरतीक
रे अभ्यंगस्नानअंगवस्त्रआभरनेरितकेअ
नुसारकरावे याप्रकारराजभोगउत्थापन
पर्यंतभावनाकरे पाछेंमनमेंसंतोखनोहि
रावे यहजानेजोमोसोसाक्षातहस्तसोसे।
वाकबकरावेंगे भगवदसेवाएकादसइंद्री
यनकोविनियोगहोतहे यहनायकरे ।
याप्रकाररहेसोउनमेंवैस्नवहे याप्रकार
श्रीगोकुलनाथजीकल्याणभटजीप्रतिश्री
मुखतेआज्ञाकिये प्रसंगदशमो १०।
अबश्रीगोकुलनाथजीकल्याणभटजीप्र
तिइग्यारमोवैस्नवकोलक्षणकहतहे वै
स्नवहोइसोजीवमात्रकीरक्षामनमेराखे ।

24

सिक्षा॰
१२

वैस्नवअपनेघरमेआवेतोप्रसन्नहोयजानो ।
जोवैस्नवह्यांप्रभुपधारेहे यहभावजामेंन
लेलगायन्हातेपानीसोंन्हवावे हेंदरगतिके
अनुसारवस्त्र पहिरायनानाप्रकारकेप्रसा
दलिवावे जैसीसामर्थ्यहोय तासामर्थ्यके
ते लायकेंनमनकरिप्रसंनकरनो काहूको
रिणकाढिकेनकरनो रिणहत्याबराबरहे
काहूकोदुखायकेकाहूकोकार्यनकरनो
सर्वथैभाववैस्नवहोयरहनो अन्यमारगीय
केठाकुरकीसेवानकरनी बिनामरियादी
केठाकुरअपनेठाकुरकेपासनहिबेठावने
अपनेठाकुरकीसांमग्रीबिनामरियादीकोन
देनी प्रसादीहोय सोबिनामर्यादीकेठाकु रि
रकेआगेभोगधरनो नामथारिकेठाकुरको
महाप्रसादभोगधरनोसोप्रसादमरियादीलै
लेउ लीलाकोभावअन्यमार्गीयनत्यागमा

गींयहांयपात्रविनांनाहिंकहनो पुष्टिमार्ग
मेंमनन्यहोइतासोमिलिकेनिवेदनतथा।
लीलाकेभावकोस्मरणाकरनो अपुनेगु।
कै रुमंत्रदियोहोउ अष्टाक्षर पंचाक्षर ति
नकोमकाम जहांतहांपात्रविनानकरनो
अपुनेसेव्यश्रीठाकुरजीजहांतांइवनेजहां।
तांईकाहूकेघरसेवानांहींपधरावनी अ।
पुनेघरसेवाकोसोकार्यसर्वथानहोतीजा
ने तोऔरकेघरहूरीसोयथरीकरे परंतु
नेमपूर्वकरचकहूंसेवाकरिचाहीये ते
सेंहीभगवदीयकोसंगनेमपूर्वककरनो
याप्रकारश्रीगोकुलनाथजीकल्यानभट
प्रतिमार्गकोसिद्धांतकहे प्रसंगबार
मो ॥ अबऔरहूंश्रीगोकुलनाथजी।
कल्याणभटप्रतिपुष्टिमार्गकोसिद्धांतक
हतहे वैस्नवअपुनेसव्यस्वरूपकोमाहा

नस्तूरगणगुरुपोतमजानिकेसेवाकरनी अ
सिवा समारगकेठाकुरवगावरनोंहींजाननो अ
ए गाकलाजाननो हलाहरवह्मसेवाचि
त्रादिमे अनन्याभावनानराखेसातात्जा।
निअपराधकोभयराखे गृहस्थधर्मभग
वत्सेवागुरुसेवावैष्णवसेवार्थजाने अ
पुनेसुखकेअर्थनाहिजाने अपुनीदेहअ
नित्यजाने श्रीठाकुरजीकीदेहगुरुकी
प देहभगवदीकीदेहनित्यकरिजाने स्त्री
पुत्रकुटंबइनमेभगवद्धर्मबिनाइनको
तुच्छकरिकेजाने इनमेलौकिकसुख
जिनकी तुच्छजाने भगवत्सेवामेप्रीतहोइ ति
नसोप्रीतविशेषराखे सोयहलौकि।
कवैदिकवस्तमेनराखे पराईवस्तय
प गईसंतापहोइ तामेलोभनाहीराखे क
छूअभपनेसुखनमाने कछुहानभए।
ला

तेदुःखनमाने गृहस्थधर्मकेंशास्त्रकाह्न
सोशास्त्रनिकेलौकिकवैदिकमेलीननहोयजा
नो पुष्टिमार्गीयसंबंधीसास्त्रकेवचनहे ।
तिनकोश्रवणहननोकहनो (ओरसबसास्त्र
पुष्टिमार्गीयसंबंधीसास्त्रकेवचनहे तिन
कोश्रवणहननोकहनो) ओरसबसास्त्रपुष्टि
मार्गतेअंतरायकरावनवारेहे यहअश्रा
नेमनमेनिश्चयजाननो भगवद्कार्यगु
रुकार्यवैश्नवकार्यमेमनराखे जेसेजल
तेकमलन्यारोरहे एसेलौकिकवैदिकम
तेन्यारोरहे श्रीभागवतश्रीआचार्यजीके
पुष्टिमार्गीयग्रंथहे तिनकोभगवत्स्वा
रूपजाने श्रीसर्वोत्तमजीकोमनलगायके
पाठजपकरनो पुष्टिमार्गीयवैश्नवकीय
हगायत्री हे सोसमगरेमतिबंधदूरिकरि
पुष्टिमार्गकोफलपावेश्रीयमुनाष्टकआदि

सिद्धा॰
१४

पाठनेमसर्वंककरनो जपपंचाक्षरमन्त्र
रकोनेमसर्वंककरनो श्रीसर्वोत्तमजीके
नाम १०८ हैतिनकोभावहृदयमेंविचार
नो गद्यकेश्लोककोभावविचारिकेताप
क्लेशकरनो सदापवित्ररहनो ऊंचेलम
नम्रहुवेलवसनकेछुवनमें ग्लानि
राखनी वैस्नवकेवस्तुमेबहुतग्लानि
नाहीकरनीअलौकिककेटहलमोलग्योहेता
में काहूकेदिखायवेकेलियेबडोअपरम
नराखनो जहांतहांविनाविचारेखानपान
नकरनोयाप्रकारश्रीगोकुलनाथजीका
ल्याणभट्टप्रतिमार्गकोसिद्धान्तकहे ॥
प्रसंगबारमो १२ अबएकबेरश्रीगोकु
लनाथजीकल्याणभट्टप्रतिकहतहे वै
स्नवभगवदीयकोकाहूसोविरोधनकरनो
जहांकोईविरोधकीवार्ताकरे तहांतें

नरहीये औरजोअपुनेसमायतोविरोधकं
सितलकरिये सवनसेहितराखनोवैस्नवा
सोसर्वात्माभावसोहितराखनो लोकनसेस्मा
नवचनक्रितार्थकरिहितकरनो उनकीवा
तफूठीहोय अपुने दूषणतेखेदपावेसोन
करनो उनकीवातसांचीहोइसोकहेतेखेद
पावेसोनकरनोयाप्रकारविवेकविचारसर्व
करेहे ताकोभगवदीयकहिये वैस्नवकी
निंदातासर्वथानकरे वैस्नवकीगुरुकीनिं
दाकरेसोनर्कमेपडे तहांविर्दरेहे वैस्नव
ऊमारगचलेताकोसमझावनो मनमेदु
खकरिकेनिंदानकरेमार्गरीतसोंविपरीतच
ले ताकोवैस्नवनजाननो अपुनेमार्गको
वैस्नवहोय औरठोरकीवातको औरके
ठाकुरकोसिद्धांतकरे ताकोसंगसर्वथानक
रनो जोदिएवडोपंडितहे समझवारेहे।

तो

तैंउवाकोसंगछुटवदाईहै थोरोसमकेकेवल
सिता॰ शुद्धिमार्गमेंतत्परहै ताकोसंगहिंकारीहै तें
१५ सबकीनिंदातेकोटिअपराधकरिसदाछुटव
होइ तेसबहोयकेलौकिकवृत्तमेंतृष्णान
गाते तृष्णातेंउत्तुपिउपजतहै तृष्णातें।
यापस्वारथ्यकेवसहोईभलोवुरोनसमझे के
वलअपनोस्वार्थहोयतोप्रसन्नहोइ स्वारथ
नहोयतोनिंदाकरे तृष्णातेंमनमेंसकल्प
विकल्पहोतहै तबअपनोस्वरूपअपनोधर्म
भूलिजातहै तबमनमेंअनेकलोभरूपीम
नोरथकेतरंगउठतहै लोभतेंभलोबुरोका
र्यसूझतनाहीहै विवेकज्ञानजातरहतहै त
बफिंठीसांचीवातबनायअपनेकार्यमेंतत्प
ररहतहै द्रव्यवस्तुलेतदेरपेनाहि तबद्वा
राकीरसाके अर्थअनेकजतनकरतहै।
तातेंवेसबकोलोभतृष्णाकरनीउचितनां

होहै वैस्नवकोकालकोभयनावैनो जो।
मोतेकछुअपराधहोयगोलोकिकवैदिक
मेआसक्तिहोयतो श्रीठाकुरजीमतकछुअ २
समर्थहोयजाये यहकालमगरेजगतकुं
ग्रसतहै सोमोहूकोलेजायगो तातेलौ।
किकवैदिकमेआसक्तनहोउंकरेविनात विचार
वैलसोसहजमेवनेसोकरेपरंतमनआस
क्तनकरे यहमनमेजानेजो अपनेधर्म
विनाकोइजगतमेसहायकरिवेवारोनाही।
है अपनोवैस्नवधर्मगयोतवसवगयोवै।
स्नवधर्मदृढहोयतोप्रभुदुःखमेसहाय
करे धर्मगयोकछुलोकिकसिद्धिभयो।
सोचारदिनमेलौकिकजातरहेओरपरलो
कविगरे तातेभगवदधर्मकोमहात्म्यहृद
यमेराखिकेकेवलप्रभुकोआश्रयकरनो
स्वार्थपरायणतेधर्मजाय लोकिकविष

32

सि॰ १९

यारिकंईद्रीकेसुखकेअर्थभगवद्धर्मजानत
हे श्रीठाकुरजीतेंगुरुविशेषअधिकमानतक
रनो यहजानेजोकछुभयोहेसोइनकीदया
तेंभयोहे आगेहूइनकीकृपातेंहीहोयगो
। जोगेश्वरकेप्रसंगमेंकहेजोठाकुरमेंवा
हिभीतहे औरगुरुवैष्णवमेंजगतमेंदया।
नाहिंसोसबतापमेंहोमततहे गुरुवैष्णव
कोसमाधानप्रभुअपनेकोसाक्षातसमानत
हे वैष्णवसोंमिलिके अपुनेजन्मजन्मके
प्राणप्रियश्रीठाकुरजीहे तिनकोस्मरना
करे यहीमनोरथराखे लौकिककार्यसिद्ध
अर्थप्रीतिनराखे याप्रकारश्रीगोकुलना
त थजीकल्याणभट्टप्रतिकहेहे यहपुष्टिमा
गयहपुष्टिलीलानित्यहे लौकिकवैदिक
देहकार्यअनित्यजानके पुष्टिमार्गकोय विरोधी
मतयालौकिककार्य असमर्पकरितसर्वजा

वैष्णवकेंशिक्षादीप प्रसंगतेरमो।१२सबवस्मा रकुं श्रीगोकु
लनाथजीकल्याणभट्टप्रतिवैष्णवकेलक्षण ४८

नतो तीर्थकोमहात्म्यहूनिमनकोभगव
द्सेवास्मरणतेंचलावनोनाही तीर्थको
फलतुछजाननोगंगाजीसरीखातीर्थकोई
जगतमेनाहीहेमोक्षकूमिनिनेमनहूमेनल्या
ई वेदपुरानसगरेसमझजाने परंतुअनेक
प्रकारकेधर्मअनेकप्रकारकेअधिकारीहे
तिनकेअर्थजाने पुष्टिमार्गकेधर्मकेवचा नम
नमेरावे अनेकवृतादिकनकेफलतुछ
जाने एकादशीजयंतीआदिहेतिनकोसत
मानेपरंतुफलकीकछुकामनामनमेनही
धारेवडेकिएहे तातेभगवदसेवास्मरणम
वीपरजाने सीहेडनाकोलौकिकविषआ प
दिहूतकेअर्थनाहीजानेविपर्यउत्रभगवदी कस्नोसे
यहोयपहअर्थजानेभगवदसेवाअर्थस्त्री
मेप्रीतराखे भगवदीयसोभगवदवार्तादे
न्यपूर्वककरे अपुनिडकर्षतानजनावे

सिसा॰
१२

अज्ञांनीहोउकेसहभावमोंप्रसन्नकरे भगवद्
धर्मकीबातआपुनेचितमें दृढविस्वासकरि।
केराखे उनभगवदीयकीलौकिकचेष्टान
देखे भगवद्धर्मदेखेतो हृदयमेंभगवद्।
धर्मदृढहोयकेरहे याप्रकारश्रीगोकुल
नाथजीकल्याणभटप्रतिकहे प्रसंगचौद
मो १४ अबऔरहूंश्रीगोकुलनाथजीक
ल्याणभटप्रतिवैस्नवकेलछणकहतहे ।
वैस्नवलौकिककीग्लानरखानकरे लौकिक
कीग्लानराखेतैसेवामेउद्वेगहोतहे तबप्रभु
प्रतिबंधकरे उद्वेगःप्रतिबंधोवाभोगोवास्या
त्तबाधकं सेवासमयलौकिकजीवकोसमा
धाननकरे सेवासमयगुरुकोकार्यवैस्ना
वभग— वदीयकोकार्यकरेतोचिंतानाही ।
प्रभुवेगहीअपनोकार्यजानिप्रसंनहोंहिवि नहेव
त्ततासोषबहुतबडोहेसोविचारअपने

मनमेंराखनो सेवासमयमेंभाषणकाहूसों
लौकिकवार्ताकोनकरे लौकिकवार्ताकहेस
सेतेभीतरख्याहरावेषहोउ कार्यार्थबोलेतो
यहपुष्टिमार्गमेंबडोसाधनहे सेवामेंकाहू
कोउरवचनबोलनोनाही सेवामेंकोंझूठो
काहूकीबातसांचीलौकिकहूनकहे श्रीठा
कुरजीकीटहलप्रीतिसोंकरिके प्रभुकोउप
कारलोमाने जोप्रभुकृपाकरिकेमोसोंअप
नीटहलकराइ सेवाकरिकेअपनो पुरु
षार्थमनमेंनमाने सेवाकरिकेकछूवासना
लौकिकवैदिकनराखे अपुनोमनसबवसव
कोधर्मजानिसेवाकरे वैस्नवहोयकेसेवान
करेतोवैस्नवधर्मछूटे वैस्नवहोयकेकछुदुः
खमेंव्याकुलनहो श्रीठाकुरजीकेवचनसाम
र्थ्यआभूषणस्वरूपात्मकजाने तातेप्रभुमें
वेंथीवस्तहोयसोअपुनेलौकिकमेंनाहिकरनी

प्रभुकोनएवस्तुकरायपुरानेप्रसादीहोयसो ।
सि०त्रा० तिनसोंकार्यचलावे नएआपुपहेरेतोविना ।
१८ प्रसादीतेवहिर्मुखताउपजे चिंताकष्टकाहू
वातसोमनमेनाहिपावे अपुनेभोगकोनिवि
तिदुःखकरिकेजाने सुखमेप्रभुकोभूलेना
सुखतेदुःखआछो जोप्रभुकोस्मरणहोय ।
सोइकुंतीजीनेकहिहे जोविपतिभलीजा ।
मेआपकोदर्शनहोइ पुष्टिमार्गीयमंत्र पं
प चाक्षरमंत्रकोजपकरे विनाप्रसादीजलपर्यं ।
तलेनोउचितनाहीहे अष्टाक्षरकोस्मरणपा । ए
वित्रसर्वकालमेस्मरणकरे भगवन्नाम
केभूलतेआसुरावेसहोय सोकालआवनु
र्लकोखायजातहे श्रीठाकुरजीकेआगवा ।
ललीलाकिशोरलीलाव्रजसंबंधीलीला ।
कोगानकरनो ओर भक्तनसोमिलीलाहे ता ।
कोगानहमिकेपुरुषोत्तमवेगहीप्रसंन्नहोइ
लके दांन लीला मान लीला रास सं: २:

भगवदीयवैस्नवकेआगेलीलारसकोगुणगां
नकरनो साधारणकोईवैस्नोहोयतोसिवाके
कीर्तनगुणगानकरे सिवाकीबातहेजोभक्ति
मार्गकोहेषिवहिर्मुखवैस्नोहोइ तबआपुने
मनमेगुणगानभगवदस्मरणकरे बाहरआ
पुनेधर्मकोप्रकाससर्वथानाहिकरे भगवदी
यकोजपपाठसेवास्मरणभगवद्धर्मकेवढाय द
केउपायकेअर्थकरनो कामक्रोधमदमच्छर क्ष
नालौकिकआवेसकोमनतेदूरिकरनो अ
पुनेप्राणसवैस्नवतथालौकिकआवेतोभगव
दधर्ममेलगायवेकोसिवाकरे नमानेतो
केछुवासोबोलनोनांही तासोवहुतप्रीतहू
नाहीकरनी भगवदीयकेमिलनकोउपाय
येहरनिसकरनोउनकीटहलकरिसत्संगक
रिभगवद्धर्मपूछनो तामेविस्वासकरिभ
गवद्धर्मनवनिआवेताकोमनमेलायक्नो।

सिक्षा
१५

शाकरनो भगवदीयको गुरुको आपने घर ला
यमेंमनकरिगृहादिकपवित्रकरनो भगव
दीयआवेंजबसम्भ्रमपधारेजाननो भगवदीय
सोंलौकिकवैदिककियाललनाहींकरनी य
हकालपरमंगलभजाननो पुष्टिमार्गकी
रीतिकोप्रकारपूछनो कोउभगवदीयदेसां
तरसोंआयेहोइ तिनसोंमिलनो भगवदीय
देसांतरसोंआयेहोइ (तिनसोंमिलनोभग
वदीयकेहृदयपवित्रहोयकोमन्नहोइ) तबआ
पुनेहृदयपवित्रहोयकोमन्नहोमेसम्भ्रमकृपा ३
करिकेसर्वधापपधारे यहभावजाननो या
प्रकारश्रीगोकुलनाथजीकल्याणभटप्रति
वैस्नवकोसिक्षादीये। प्रसंगपंद्रमो १५
अबश्रोरहं श्रीगोकुलनाथजीकल्याणभट
प्रतिवैस्नवकोसिक्षादेतहे। वैस्नवहेसपर
देसाजायतन ह्यपुष्टिमार्गीयश्रीठाकुरजीवि

उचत है पात्र
कोर उनको मन
प्रसन्न होय तैसे
ही करनो

राजतहोय तहांआपचलिकेजाय जहांभ
गवदीयहोयतिनकेपासचलायकेजाय ।
श्रीवल्लभकुलविराजतहोयतहांनेमसेंद
र्शनकरिवानमणांनकरनो जहांअन्यमा
र्गीयसजामार्गीयहोउतहांतोसर्वथाहीनजा
य पाखंडरीतसोअपनेदेहनिर्वाहकेली
ये सजामार्गिहोय तहांतोसर्वथाहीनाही
जाय जहांपुष्टिमार्गकीरीतसोंसेवाहे ता
हांसावधानश्रीपुरुषोत्तमविराजेजानने । पूरु
श्रीवल्लभकुलकेमंदिरमेदर्शनकरिवेको
जाइये तवखालीहाथनाहीजानो नित्य
तवनिआवेतोजवजाइये तवतयाविस
होइयेतवतथावडेउत्सवआदिमेयथास
क्तिसाकपाकयथासक्तिपोचाइयेभेटका
रिये श्रीजीकेणकोदर्शनमेआलसना
हीकरनो प्रभुकेदर्शनमेआलसनाही

सिद्धा॰
२॰

करनो प्रभुकेदर्शनमेंआलसकरेनोअज्ञा
नवढे प्रभुकीसेवाकरनमेंदर्शनत्रुकेता
मेंअपरायनाही दर्शनतेसेवाअधिकहे
प्रभुकेदर्शनतेज्ञानहोइ ज्ञानहृदयमेंभ
यो तबभगवद्स्वरूपहृदयारूढभयो ।
अज्ञानतेविशयाशक्तिहोतहे जपकरेसो
काहूसोजनावेनाही जपनामहेसोअंत्य।
तगोप्यकोहे सोहृमेकहेजोजपपमेकर
मेजोअंगुष्ठरेचककहूखुलेनाही याभांति
भीतरअनुभवकरतहोजपकरे जितनोप्र
गटहोइतितनोजपमेंतफलकोतिरोधा
नहोइ जपकीमालागोमुखिमेंतेबाहर
निकसेनाही मालाभीतरडरकेजायतो
उपरनामे निकासेहरस्मायकेण सेय
रेमोफेरनडारके मालामेंमनिका १०८
रहेतिनकोजपकरेसुमेरकोउलंघनन

करे ॥ तुमेरउलंघेतेलीलातेबाहरपरे ॥ ज
पकोफलतिरोधानहोइगो ॥ ताबिउपरउपर
नाहरीकेजपकरे ॥ गोमुखीमेलौकिकहे
जपमेबोलेनाहीदेहमनचंचलनुकरे ॥ ना
ममेटरहे ॥ लौकिकइष्टतेमनलौकिकमे
नजाय ॥ जपकोसेवाकोसाधारनलौकिक
क्रियानजाने ॥ लौकिकजानेजबप्रभावासो
जपनहीकरावेप्रतिबंधहोय ॥ सेवाओरज
पकोमहात्म्यभूलेनाही ॥ महात्म्यभूलेत
बसाधारनजानेतबआलसहोय ॥ आलस
तेअज्ञानहोय ॥ अज्ञानतेदुरबुधिसंसारास
क्तिहोइ ॥ संसारासक्तितेश्रीठाकुरजीतेबा
हिर्मुखहोय ॥ यहकहेजोसेवादर्शनजपा
पाठलेकहाहोयगो ॥ लौकिकविनानिर्वाह
कैसेहोयगो ॥ कोइवैस्नवमिलेतहायाविड
करिकहेजोसेवादरसनकहाहेमनलागे

सि॰ता॰
२१

जबकरीयहोइ यहतोयोहीयविमरतहेया
प्रकारसिद्धांतकरिलौकिकमेंतत्परहोयम।
नहेसोभगवद्धर्ममेसेवादर्शनजपपाठकी
र्तनवार्ताकरतलगेगो कछुलौकिककी
पतेलगेगो परंतजीवकोउत्तरीतुचिहे।
तातेभगवद्धर्ममेमननाहिलागतहे याप्र
कारदुष्टस्थितितेश्रीठाकुरजीअप्रसन्नहोत
व हे वैसेमार्गमेआयकेदासहोयभगवद्ध
र्मणमेसाधारणनजाने कहामेरो
लौकिकदेहतासोप्रभुअलौकिकसेवापर
। महाप्राकरिकेकरणहे लौकिकजीभ्याते
भगवन्नामनिकसतहे सोवडीमहाप्र।
भुजीकीकृपातेमानुभयोहे लौकिकतो
सगरीजोनिमेसिद्धहोतआयोहे प्रभुको।
स्वरूपकोदर्शनसेवास्मरणजपपाठलोप
रमदुर्लभहे एसोमहात्म्यजानेनतबसीता।

होय याप्रकारश्रीगोकुलनाथजीकल्याण
भटप्रतिवैस्नवकोसिखादिए । प्रसंगसोल
मो १६ अबश्रीआरहूंश्रीगोकुलनाथजी ।
कल्यानभटप्रतिवैस्नवकोसिखादिए जो ।
वैस्नवहोयसोपुष्टिमार्गसर्वोपरअधिकजा
ने तबपुष्टिमार्गमेरुचिहोय सोसर्वोपा
रमार्गकवरिहेजबपुष्टिमार्गीयभगवदी
यके कहेकोविस्वासहोयतबफलसिद्धि
श्री होय भगवदीयकोंलौकिकजाने भग
वदीयकीदेहवानीसर्वहीअलौकिक
जाने तहांकोउकहेभगवदीयअलौकि
ककेसेजानिये इनकेविषअलौकिकके
सेजानिये इनमेविवेकधैर्यआश्रयदृढ
होय स्वभावमेअभिमाननहोइ भगवद
धर्ममेअसंतपिनहोय बहुतकपटछ
लस्वभावरतानिंद्राकाहूकोअलोवरोक ।

सि॰त्रा॰
२२

रनोनाहीं साचोविश्वासयहलौकिकनको।
रे जोकोउसंजोगकोरपायकेहोयजायतो।
मनमेंबहुतखेदपावे ऐसेंभगवदीयकोसं
गसर्वथानकरनो जैसेंश्रीठाकुरजीकेदर्श
नतेंपवित्रहोय तेसेंहीभगवदीयकेसंगहो
तहीमनमेंआनंद भगवद् धर्मकी
स्फूर्तिहोइ भगवदीयकीसेवातें श्रीठा
त कुरजीबहुतप्रसन्नहोय भगवदीयकेसं।
गतेंअसमर्पितअन्नादिपाथयछूटे असमर्पित। म
लियेतेंआसुरीबुद्धीउत्पन्नहोइ अन्याश्र
यतेंवैष्णवधर्मपतिव्रतातेंविभिचारिहो।
इ ताकोभ्रष्टजाननो पुष्टिमार्गमेंत्यागी
कारनहोइ अनेकमायाकेसंसारमेंदुःख
हैताकोपावे औरवैष्णवसबनेअर्थकरे
बंभरनपोषनकेअर्थउद्दिमकरनोनाहीं।
मनमेंयहविचारेजोभगवद्सेवाग्रहसेवा

वैस्नवसेवामेकछुअंगीकारनहोयतोओह
रमफलनहोइ यहभावराखेतोलौकिक
ओहारवाकोवाधाकछुनकरे ओरअ
प्रनेकुटंबकोभरनपोषनचल्योजायभग
वदधर्मबढे ओहारहूअलौकिककोनां
मलोगनकोवतायसवदिनपचनहीसरा
नो राजभोगपीछेउत्थापनकेभीतरेइतां
नेमकरे सभइतनेहीमेजोआवेनहारा
होइसोप्राप्तहोइ सेवादर्शननित्यनेमसों
करे वहुतद्रव्यकमायतोश्रीठाकुरजीँग्र को
हकोपथरायवस्त्रआभूषभेटकरेअलौ। ण
किकमनोरथमेंचितराखे नानाप्रकार
म कीसांग्रीकरिवैस्नवकोप्रसादलिवावे।
द्रव्यकोसंकोचपरेतवश्रीठाकरजीकेपा
त्रआभूषणवस्त्रइनमेअपुनीसत्तानमा
ने जोथीरजरहेतोनजानेराजभयकुटा।

सिक्षा॰
२३

वभयजोंने तोअपुनेगुरुकेद्वारपठायसखीकूं
जाय श्रीठाकुरजीकेवैस्नवकोभयपहिलेतो
होइ तोवेभववढावेनाही नानाप्रकारकी
सामग्रीकरिवैसनककोसमाधानकरे तामे
द्रव्यकोसुफलताहोइ पाछेकोईवातको।
दुखनपावे छीनछिनमेप्रभुकोनामस्म।
रनकीमरनेकोविचारकरे मनमेदास्य।
भावराखिकेअहंकारादिकमर्दनराखे या
प्रकारश्रीगोकुलनाथजीकल्याणभटप्रति
वैस्नवकोसिक्षादिए। प्रसंगसत्तरमो १७
अवओरहूश्रीगोकुलनाथजीकल्याणभ।
टजीप्रतिवैस्नवकेलक्षणकहतहे जहां
अन्यमारगीयवहिरमुखपुष्टिमार्गकीनिंदा
तथाश्रीवल्लभकुलकीनिंदा श्रीठाकुर।
जीकीनिंदातथावैस्नवपुष्टिमार्गीयकीनिं
दा श्रीभागवतकीनिंदा पुष्टिमार्गीयधर्म

कीनिंद्या एसेइ श्रीजीवनयामकवहूनवो।
ठिठे आवस्यककारनणायकेमिलापहोइतो
अपनेप्रभुहिमारगकीवार्त्ताचरचाकवहून
करनी जोकोइचलावेतहांगोष्यकरिराखे
तहांमकामकरेतोअपराधपरे कानतेनिं
द्यासुनेतोयहमांसुमेकहेजोअपनेप्रभुकी
निंद्याकरे ताकीजीभकाटीये नवनायतो
अवनमूंदिकेतहांतेभाजिजायपरंतुकान
नेसांसुने नाही जैसेहरिदासजेमलको
सिद्धांतहे जहांताईवनेतहांलाइ एसेव
हिर्मुखसोमिलापनाहीकरनो जोमनकुं
खेदहोयसोकार्यसर्वथानाहींकरनो वहि
र्मुखकोनजो एतन्मार्गीयकीनिंद्याकरे।
आछोबडोपंडितशास्त्रज्ञक्योउतमकुला।
हेएतन्मार्गकोवीरोधीसोवहिर्मुख सोही
नजानतहेएतनमार्गमेअनंतअथाहसोतह

शिक्षा
२५

सोऐसेजीवनकेंजरियभ्रँमरनँनाहीहेतोउयह
ज्ञानतोजोहमरेजन्ममेंमरनंआवेगो जोमर
नैआयकेमार्गकोविरोधिहेताजानियेजोपुष्टि
मार्गकोफलयाकोनाहीहे मरनकेप्रकार
तेवकिआरिकोपावेगोजोसंसारीहेएतन्मा
र्गीमेनप्रेतहेनवेरहे मायारतहे तिनसों
लौकिकवैदिककार्यअर्थप्रयोजनमात्रमि
लनो तातेमार्गहेपीकोत्यागकरनो पु
ष्टिमार्गीयअनन्यकोसंगकरनो याप्रकारा
श्रीगोकुलनाथजीकल्याणभटजीप्रतिवैस्ना
वकोसिक्षादीए ॥ प्रसंगअठारमो ॥ १८
अवयोरहेश्रीगोकुलनाथजीकल्याँनभटा
प्रतिवैस्नवकेलक्षणकहतहे पुष्टिमार्गीय
वैस्नवहेसोभगवदीयकेपासकोइआवेतो
वाकोसंसयदूरिकरि पुष्टिमार्गीयभक्तको
बढावे सुगमउपायबताए तेनयेवैस्नव

कोमनबढे तातेंनवरत्नमेंकहेजो आहा
नादृष्टवाज्ञानात अज्ञानकरिकेंमैंनेंआपते
सर्वकार्यसिद्धीभएफेरबताए तिबेटनेंतुम
ह्नेवंसर्वथात्याज्यदुष्टैर्जनैः सरनआएपाछेंवे
स्नवकोसंगहोय पाछेंतापक्लेशासमझे ।
मध्यमकठिनउपायहे काहेतेंमरणआयवे
मेंजीवकोसंदेहपडे तेसेंहीताद्दसीक
मसोंसेवास्मरनलीलाकीभावनातापसनेह
बढावे तबअनन्यभगवदियकोअपनेंपर
महीत्हजाने औरपुष्टिमारगतेंविपरीतफल
बतावे ताकोअपनेंसंगजाने तातेंसेंथा ।
मटसाचारेकोनिष्प्रपंचसंगबहुतमिले ।
ताकरियाकेभगवदधर्मकोनाशयाकालक
रिकेअनेकप्रकारकेप्रतिबंधयाजीवकोआ
यकेपरतहे सत्संगदृढहोयतोभगवदध
र्मबढे नाहीतोआसुरायहोयजाय यासें।

सिद्धा॰
२५

कारश्रीगोकुलनाथजीकल्यांणभटप्रतिवैस्न
वकोसिद्धांतदीप प्रसंगउगनीसमोः १९ ॥
अवश्रोरहूंश्रीगोकुलनाथजीकल्यांनभट
प्रतिभगवदीयकेलछणकहतहे भगवदी
यकोमनलगायकेभगवदसेवाकरनी पी
छेराजभोगआरतीपाछेएकांतमेदोयघडी
तथाच्यारघडीजेसोसोकार्यहोयतेमेबेठी मा
नसीसेवामेन्हायहस्तसोंश्रृंगारकरे पाछे
भावनाहीमेसुंदरसांमग्रीकरिआरोगावे रा
गभोगपरियंतकीसगरीसेवाभावनासुंकरे
पाछेमहाप्रसादलेइ याहीप्रकारउत्थाप
नसेंसभोगपरियंतसगरीभावनाकरे पाछे
सेंजादिककीभावनाअनंतउल्लेमहे अपुनो
मनलौकिकआशक्तिहोय तोनकरेदैन्यकरे
महा प्रभुजीसमहाराजआपकृपाकरिके
ईतनोदानदीएहो औरहूआपदासजानि

कृपाकरेंगेयाप्रकारप्रथ

मभावनामेप्रभुकेंशृंगारमेमनलगावे का
हेतेमनजन्मजन्मकोअविद्याकरिकेभगवद
स्वरूपमेलगततनाहीसोशृंगारमेअद्भुतछवि
देखिके मनकोशृंगारहरे तबकारियहो
इ तबकृस्याणाभटनेप्रस्नकियोजोमहारा
जकेअशृंगारकोवरणनकरिये तबश्रीगो
कुलनाथजीशृंगारकोवरणनकहतहे ।
प्रथमश्रीठाकुरजीकेचरणारविंदकोहृद
यमेल्यावे परमकोमलसुकुमार तिनमे
सोरहचिंन्हआरक्तप्रथमबडेकेपद्मआरक्त
होतहे तेमेवामचरनअष्टदच्छिणमयादा
भक्तस्थिरीकृत्यमरियादान्वतदाश्रितः तिन
मेनखदसकोकांतचंद्रमावततापहारितिन
मेनूपुरआदिनखभूषणजडाऊउपरपानव
नफूलजडाउ ताकेउपरजेहरपायल कां
करीकडाहथसाकलाआदिनाकोसुमरण।

सिद्धा॰
२२

स्याममनोहर ताकेउपरगुल्फसुंदर तापरा
घुटरू तापरजंघकदलीखंभवत तापरक
टिकेहरिनवपतरी तापरकिंकीनीपीतांवर
तथाधोतीसूथनकाछनी तनियाआइबंद
परदनीपिछोडातापरनाभीगंभीरतहांतीना
चि न्यारीत्रिवली तापरहृदयविलासउचेताप
र चोकीपदकधुगधुगी चंपकली वधी
वैजंती मालामोतीकी मालानिर्मितसोना
कीझूटकेकुसुमकीमाला तापरकंठश्रीसा
कलपगला दोऊभुजमेवाजूबंदजड़ाऊ।
फोंदनासोम वलयपहुंचि कंकनकडा
हथफूलनखावली १७ श्रीहस्तमेलाल
मुंदरी चिवुकपरहीराकोभूषण अधरनी
चेओहलाललहास्यमेंदंतकांतीकोटिवीज।
लावत पानअरोगे आरक्तमुखभए स्त
कउचतनासिकावेसरमोतीदोऊनेत्र आरा

फहेरेउजलतारा ताकीकराछपाचप्रकार
कीचितवनमनहरे होऊभृकुटीकोमथनल
वन सुंदरभालपरऊनऊमनतथाकेसरतथा
कसतूरीकोतीलक भोहपरमसिबिंदु रेटी
कुंचरवारीअलकहोऊकर्णमे कुंडलमोरा
कृततथामकराकृत कर्णफूलऊपरकर्णी।
का मसतकउपरमुकट ऊलहीहिपारो गु
लपगा फेटाइमालो मेहरो पागरोपी भां
तिभांतिकेरंगकी तथाजडाऊ वनमालागुंज
माला चरणारविंदमेनवलसीगंधहोऊचो।
रहाभिनवतभक्तअनेकहासविनोदलीला।
कोस्मरणकरेयाप्रकारमनकोसरूपासक्ति।
वारवारवीचारे जवसहजहीमेध्यानहृदय
मेतेनरहे तवभगवानकीलीलासिद्धिहोइ
नानाप्रकारकीसामग्रीऊंजके उत्सवादिक
कीनित्यकीभावनाकरे याप्रकारमानसीक

सिखा
२१

रीदंउवनकोरे तबप्रभुकृपाकरिहृदयमेंपधा
रे तबलौकिकतेंमनछूटिकेंअलौकिकतेंमन
छूटिकें) अलौकिकमेंलगावे तबरोमांचहोइअ
लौकिकतहाँरुदनकरे याप्रकारप्रेमकीदिसाहोइ
ताकेभागकोपारनांही याप्रकारश्रीगोकुल
नाथजीकल्याणभटप्रतिवैस्नवकोंसमुझाय
प्रसंगबीसमो २० ॥ ॥ अबश्रीरघुश्रीगो
कुलनाथजीकल्याणभटप्रतिवैस्नवकोंसि
खादेतहे कबहूसंजोगकोसुमरणकरिहृदेमें
आनंदपावे कबहूविरहकरिअत्यंतदेन्यभा
वकोंप्राप्तहोइ इहदेन्यतापरमफलरूपहे दे
न्यतेहरिसंतोषपावे देन्यतेश्रीठाकुरजीअत्यंत
प्रसन्नहोतहे तबनिसाधनहोइ तबइहविचारे
चित्तेनदुष्टोवचसापिदुष्टःकायेनदुष्टःक्रियया
चदुष्टः ज्ञानेनदुष्टोभजनेनदुष्टोममापराधः
कतिधाविचार्यःयाभांतिअपुनेकोंसाधनक

रिहीनजानिसनतमे प्रभुकोदासजोन आड
नेस्वरूपकोवारंवारसंभारतो जोमेंकोनगि
नतीमेंहो अनेकनरकनकेकीडाहेतिनमेंप
कमेंरूंहो नरकमेंनेमेंरूउपज्योहो मेरीदेह
मलमूत्रसोंभरीहे जीतनीवस्तखोटीकहीहे
सोसगरीमेरीदेहमेंहे ओरकहादेउहाडचाम
मासरूकसोंभरिहे अनेकहारसोंमलबहतहे
एसाजोमेंमहादुष्ट अज्ञानिकामक्रोधमदमछ
रेरसोंसोंभर्यो मोहरूपजेवरीतेंबध्योसंसारमे
अनेकदुःखसदवेकोभोगसंसारमेंकरतहो य
सोमेंमताकोकरूंठीकानोनाहिंहे ताकोमहा
प्रभुजीपरमकृपाकरिकेअत्यंतदीनदयाल
हे जोमोसारविपतितजीवकोसरनेलीयहे
महादोसकिवानमेंहो सोमेंकहांपुष्टिमार्गकी
मरयादानाजांनोहों सोकोनरकहूमेंठीकानोंना
हीहे तातेंमोपरमहाप्रभुजीनेसरनलेके अ

सिता ५५

56

पुनेसरवसस्वपुरुषोत्तमकेचरणारविंदमेंमनल
गाऊं कोटानकोटीजन्मतेंसंसारमेंभ्रमतमहा
दुःखीभयोहौं तातेंअबसंसारतेंमनकोंकाढी
प्रभुकेचरणारविंदमेंलगाऊं याप्रकारअप
नेमनकोंछिनछिनमेंसमझावतवदैन्यताउत्पन्न
होय सर्वबस्तमेंसत्यभगवद्बुद्धिजाने औरउ
द्यमपैसाकरेजामेंअपनोधर्मनजाय जबधर्म
गयोतबयाकोसर्वपदारथकोनाशभयो आ
पुनीखरीमजूरीकोहोयपैसोश्रीठाकुरजीप्रस
न्नतासोंअंगीकारकरें यहअपनेमनमेंनिश्च
यनिरधारकरिअपनेधर्मकीरक्षाकरनी ।
श्रीठाकुरजीकोनामलेकेकछुबस्तलाइ श्री
ठाकुरजीकोंसमर्पनीनांही वामेंतेंआपुन
कोंखानपानकरेतोमहापातकीहोय ताकी
सेवाव्योहारदूषीकोजाय श्रीठाकुरजीकेमि
सअपनेखानपानकेलियेंधर्मवेचिकेंलायोतो

वाकोंसमग्रोभगवद्धर्मनष्टकेजाय ऐसेही
कीर्तनकरिदेहनिर्वाहचलावे भगवद्धर्म
प्रगटकरीअपुनोदेहपोषनकरि नामेंकछु
भगवद्धर्मफलरूपहोइनाहीं संसारमेंकेव
लसंसारीरीतनहोयतेसेंचले परंतुकाहूकों
डरोनकरे लोगसगरेजानेंजोयहकेवलसं
सारीहे नवभगवद्धर्मबढे जहांदसवैष्ण
वपतनमार्गीयहोइ तहांभगवद्धर्मकीवा
र्तीचरचाकरे वैष्णवकेआगेंअपुनीवडाईपु
रुषार्थप्रगटनकरे कुटंबमेंसंसारीआगेंअ
पुनोपुरुषार्थप्रगटनकरे जोमेंहीकमावत
होंतोतेरदेहस्याधर्मचलतहे प्रभुवडेहेंउनस
बप्रकारतेंमोसारखेकोंपालनहे यामका
रसेंवैष्णवरहे नवभक्तिबढे सगरोकुटंब
श्रीठाकुरजीकेदासहेंइनरूकोंप्रभूपालन
करतहे इनकेपीछेमेरोहूपालनकरतहें ।

ज्ञानमार्गमारगमेंसाधनकहत्यागद्रढहोइत
सिक्षा २० बउधारहोई यहभक्तिमार्गमेंयाप्रकारसोंव
लेनोरहस्यकोउद्धारहोई संसारीकेउद्धार
अर्थयहमारगहेतामें त्यागीविवेकीहोइ
यामेंकहाकहतेंतायहज्ञानतारसोभगवदीय
केसंगतेंहोई औरहसरोउपाइनाहीहे याप्र
कारश्रीगोकुलनाथजीकल्याणभटप्रतिसि
क्षाकीए प्रसंगइकीसमें ॥ २१ ॥ ॥ अब
आगेंश्रीगोकुलनाथजीकल्याणभटप्रतिवै
ष्णवकोंसिक्षाकरतहें वैष्णवकोंमिथ्याभाष
नसर्वथानांहीकरनो झूठबराबरपापनाही
हे राजायुधिष्ठिरइतनोकहे नरोवाकुंजरोवा
अस्वत्थामामरयो इतनेझूठकेपापतेंनरक
कोदर्शनकरनोपरयो मनमेंमहादुःखपाए
जानरककेदेखितेंमहादुःखपावे तामेंपरेलोके
दुःखकोपारनाही तातेंमिथ्याभाषणसर्वथा

59

नकरे मिथ्याभाषनतेंकेवललौकिककोंस्
वेयकष्टहोतुहे तामेंमिथ्याबोलनोमहापाप
रूपहे श्रीठाकुरजीकीरसोईजाकेताकेहाथन
करावे अपनोहाथअपविचनासोंकेरसोईको।
कार्यमहादुःखरूपनजाने जोमोकोश्रम
होयगोकेसेंकरूं ऐसोनाहीसमझोजात यहपु
ष्टिमार्गमेंश्रीठाकुरजीकीरसोईकीटहलपरम
उत्तमतेंउत्तमहे जहांताईअपनोसरीरचलेतहां
ताईरसोईओररसोनकरावे सेवाश्रृंगारकरावे
परंतुरसोईकीअपरसन्यारीरखसारवैताको
उत्तमभगवदीयकहिये सरीरनचलेतबआ
वश्यहोइतबओरसोकरावे मनसेवामेंराखे
मनमेंमहातापराखे रसोईकरिआपुहीखा
यवेठीरहे ताकोमहादोषहे प्रथमवैसवकी
पातरीधरे वैसवकोलिवापपाछेंआपुलेइ
यहपुष्टिमार्गमेंवैसवमेंदासभावमुख्यकरि

मिता
३१

केंगावे दासनाकोंकहियेजोवैस्नवकीजूठि-
नावाय औरयामार्गकीयहमरियादाहेजो श्री
ठाकुरजीकीश्रीवल्लभकुलकीजूठिनविनाओ
रकीवायतोभ्रष्टहोइ यहधर्ममेंसंप्रायनिवा
रनकरतहें सोगायकोमहाप्रसादप्रथमनि-
कासे तवसगरोमहाप्रसादवैस्नवकीजूं
ठिनभई तथामहाप्रसादमेंतेंप्रथमवैस्नवकों
दियो पाछेंवच्योसोवैस्नवकीजूठिनभई पर
तुवैस्नवकेलिवाइवेकीसामर्थनहोइ अपुनी
हीकार्यनिमेंनेमेंचलेतवकहाकरे तहांगाय
नकोभागतोआवस्यकाढनो औरयहवेसोई
करेतवयामनुष्यकीआसाप्रथीदेवतापित
रसवआसाकरतहें सोजवगायकोग्रासका
ढ्यो तवसगरेतृप्तहोयगए तातेंगायको
भागकाढनोयहवैस्नवप्राणीमात्रकोधर्महे
औरश्रीठाकुरजीकीसामग्रीमेंअपनोमनलगा

वेसोमहापापीहोइ श्रीठाकुरजीआरोगेनांही ता
तेंसिद्धसामग्रीकाहूकोंदिखावनोंनांही श्रीठा
कुरजीकेलीयेंफलफूलसामग्रीकछूकरिहे
तामेंतेंहीउद्यादिककाहूकोंप्रथमदेनोंनही ।
जोलौकिकप्रीनकरिकेंदेइतोजोलेयसोबहि
र्मुखहोइ ओरयाकोंपमेजायश्रीठाकुरजीअं
गीकारनांहीकरे ओरभगवदसेवागोप्यकरे
काहूकोंजनावेनांही जोसेवाप्रगटकरिवेउ
नीप्रतिष्ठाबढावेंताकोंपाखंडीकहीये ताकी
सेवामेंकछूपुष्टिमार्गकोफलसिद्धहेनांही पा
खंडकरनवारेकेहृदयमेंलौकिकआवेसहोय
लौकिकआवेसतेंबहिरमुखहोरसेवामेंप्रतिब
धपरे पाखंडकोमूललोभहे सोजबलोभछूटे
तबपाखंडनहोय लोभकेलियेजगतमेंपाखं
डकरतहे सोलोभीपाखंडीहोयताकोंस्वरूपा
प्रपरूढोइजा लोभकेबसज्ञानविवेकविचार

सिता
३२

सबजानतरहैं पमैंलोभीपाखंडीकेहृदयमेंश्री
ठाकुरजीकबहूनाहीआवैं तातेंसेवाभगवद
धर्मथोरोबनेतामेंबाधकनाही थोरेहीमें
भगवद्धर्मतेंयाकोकार्य सिद्धह्वैजाय बहु
तकीयो ओरपाखंडलोभलौकिकासक्तिमेंभ
गवद्धर्मबढेनाही तातेंअलौकिकरीतिसों
करेश्रीठाकुरजीकेजानेकार्यहोयगोलोगन
केजानेकछूसिद्धिहेनाही वैस्नवकोयहधर्महै
उत्तमतेंउत्तमसामग्रीहोय सोश्रीठाकुरजीको
भोगसमर्पिये जोअपनेपासद्रव्यनहोयतेंउम
नमेंतापकरिकेंकहृजो प्रभुकेलायकहै ज
होतोईबनेंनहोतोईउत्तमतेंउत्तमसामग्रीनथा
नौतनफलफूलथोरोबनेंतोआवश्यकलेनो
तामेंमहद्यीषमसीनकोवीचारनाहीकरनो
श्रीठाकुरजीकोकमलअत्यंतप्रियहै जहांता
ईबनेंनहोतोईमगायकेंअंगीकारकरावनें।

श्रीठाकुरजीकोंअतरआदिसुगंधवहुतही
प्रियहैं सोयथाशक्तिसमर्पनो नित्यनव
नेंतोवेईउत्सवमेंसर्वथासमर्पै सोविदेवर
तिकामेंपानीउपर सुगंधकेभावनेंप्रभुकों
समर्पै सोभावहोयतोसगरीवातवनें पी
तातेंकहानसिद्धिहोय श्रीठाकुरजीकोंतु
लसीअत्यंतप्रियहैं सोश्रीठाकुरजीकेचरना
रविंदमेंसर्वथानित्यनेमसोंसमर्पनि तुल
सीसमर्पनमेंसमर्पनगद्यार्थकोपाठकर
नो पाठसहितसमर्पे काहेतें श्रीठाकुरजी
केचरणारविंदकोसंबंधश्रीआचार्यजीम
हाप्रभुजीद्वाराभयोहै तातेंश्रीआचार्यजी
कोसर्वोपरज्ञाननें औरतुलसीहेसो वृंदाको
स्वरूपसत्यपतिव्रताहै सप्ततुलसीकोविव
हे तातेंदृढसंबंधभयोजाननो तातेंचरनार
विंदपरतुलसीसमर्पे नवजादिनजासमय

सिता
३३

ब्रह्मसंबंधभयोहै नामसमयकोअपुनेगुरु-
कोंसन्मावश्रीठाकुरजीहैं तीनह्वीकेरूपअ
पुनेश्रीठाकुरजीमेंजानिसर्वे याप्रकारनि
मनेमसोंतलसीसमर्पनी निमनेमसोंपे
वालकहतचरणापरसकरनें काहेतें
चरणारविंदसोंहढसंबंधकरायपहें सोचर
स णपरतेंसंबंधपीतबढे औरश्रीठाकुरजी
केचरनारविंदमेंभक्तिहेसोभक्तिकीवृद्धि-
होय औरयाप्रकारविचारेजोकहांभक्ति
रूपचरणारविंदअलौकिक औरमेरोहस्त
लौकिकपरंतश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीअ
पनेगुरुरूपकीकृपातेंयहूपदार्थप्राप्तभयो
है प्रभुमोकोंचरणापरसकरावतहैं तहां
पूतनामोक्तकेप्रसंगमें श्रीआचार्यजीमहा
प्रभुलिखेहैंजोपूतनासोंरहदजारबालक
केप्राणलेऊमारी काकेपुरुषार्थरूपतेंनें

65

द भवनमें आई जो श्रीठाकुरजी पूतनाके प्राए
सोखे सो पूतनाको दुष्टभाव नातें मातृभ
भ करे बालकनको भक्तिभाव सो श्रीठाकु
रजीके हृदयमें रहे सो श्रीठाकुरजीनेयु
ह विचारी जो सो वृहहजार भक्त हैं तिनको
पूतना रात्तसीके संग करी आसुरावेसभ
यो है सो आसुरावेस ज्ञदिय श्रीठाकुरजीके
हृदयमें है नउ मिटे सो नाही तातें चरणार
विंद भक्ति [illegible] रूपकों संबंध होउ तब आ
सुरावेस मिटे यह विंदके ब्रजांउ वाटकी ग
मृत्तिका चरणास्त रूप आउ बालचरित्र दे
खाय उन भक्तनके अर्थ आप मुखमें मेल
त भए तब यह उपरको चरित्र ब्रजके बा
लक आवेद रूप बलदेवजी जसोदाजीउ
पास आय उ रुपाय के कहत भई जो कृ
ष्णतु साचे माटी वेंगा खाई तब श्रीठाकुर

सिता
१४

जीकहैंतभएमैयामैंमाटीनांहीखाई यहली
लाकरिश्रुतिपुरुषोत्तमतानजनाई जोवल
देवजीईश्वररूपहैंतोऊजानेनांही जितनोप्र
कारप्रभुजीजतावेतीतनोंहिजाने तबश्री
जसोदाजीकोमनखेललिकैब्रह्मांडदीखाय
यहमरतिकाकोप्रसंगगोप्यकीयो यामैका
रचरणामृतदेकैसगरेसोरहहजारबालक
नेंकोसाद्धकिये पाछेंअतचयोप्रसंगमैंचीर
हरनकरिईनकोचीरहारनेजनहारइनके
पुरुषार्थहृदयमेंस्थापनकरेतेनवरासली॰
लाकी अखंडरात्रीकीजोप्रपनादेखनकीभ
ई सोअलौकिकरात्रिदिखायववदानदीप
जोसरदसमयरासलीलामेंदांनहोइगो
काहेतेंचरनारविंदकेसंबंधकरिसगरीसि
द्धभई तातेंचरणामृतलेनो तुलसीचर॰
नारविंदपरसमर्पनी चरणापरेंकरनें या

स

प्रकारतेंमराखे नवभक्तिवढे नवपुष्टिमा
र्गकीप्राप्तिहोत् तुलसीहेसोभगवद्धर्ममेंनि
तनेंप्रतिबंधहें तिनसबनकोहरिकेंअलौ
किकदेहकीसिद्धिदाताहें ओरतुलसीकों
अलौकिकस्वरूपहेसोकहतहें यहपुष्टिमा
र्गमेंमुख्यश्रीस्वामिनीजीकेसंबंधभावविना
रंचकहूफलकीप्राप्तीनांहीहें सोतुलसी
श्रीस्वामिनीजीकेश्रीअंगकोगंधहेंतातेंअ
त्यंतश्रीठाकुरजीकोंप्रियहें स्लोकः प्रियो॰ गु
गंधसुरभीतुलसीचरणप्रिये समर्पयामि
मिहदेहिहरेदेहमलौकिकं १ याभावतेंतु
लसीकोंवडोपदार्थहें ओरपतिव्रतापारव
तीविराजेंनकीजीइत्यादिकनकीआधिदेवि
कपतिव्रताहे तातेंपुष्टिमार्गकोंसंबंधदृढ
भयोहे सोयप्रभृतनेतोजगान्नवतीवाविद्य
रोतेंदेहस्वरूपपर याप्रकारअलौकिकभावजा

सिक्षा
३५

नितलसीसमर्पे विंदारूपतेमर्यादामार्गकी
रीतसेंाजगतमेंदिखाएहें जादिनसेवाश्रीठा
कुरजीकोचरणपरसनबनिआवे सोदिनमि
थ्यागयोजोनितापकरनें वांवारअपुनोही
नस्वरूपकीभावनाकरनी प्रभुकेअलौकिक
स्वरूपकीभावनाकरनी औरयहमनुष्यजन्म
अत्यंतदुर्लभजाननें दासभावहोयकेंप्रभुके
स्वरूपकीटहलकरे तोप्रभुप्रसन्नहोय अप
र्येविचारीकेंअपराधकोभयराखनें भयवि
नाप्रीतनहोय सनेहअत्यंतदुर्लभहें तातेंप्र
भुकोभयहेसोईवडोपदार्थजानेसनेहबिना
सगरीक्रियामिथ्याजाननी याप्रकारसोंभग
वदसेवाकोनेमअपुनेपुष्टिमार्गकोपरमधर
मजानिकेंकरनें तेसेंहीअपुनोपरमधर्मभ
गवदीयसोंमिलनकोराखनो दुःसंगतेंरख
तरहनें सत्संगमेंपरमसुखपावनें भगव

दीयकेसंगविनाश्रीठाकुरजीमेंसनेहहोनो
हीआवे सत्संगतेंअरुनेधर्मजायवेमेंभय
होय दुःसंगतेंपापासक्तिहोइ धर्मतेंरा
योनवसंगतेंपापकोमूलरूपकेजाय तातें
भगवदीयतेंभीनसहितमिलापराखनाहि
मेंयाकोकल्याणहे सत्संगविनाहृसरोउ
पाययहहंससमानसमहंतविवेकोनांहीहे या
प्रकारश्रीगोकुलनाथजीकल्याणभटप्रति
वैस्नवनकोंसिखादिये प्रसंगबाईसमो २२
अबश्रीगुरूश्रीगोकुलनाथजीकल्याणभट
प्रतिवैस्नवकेलक्षणकहतहैं वैस्नवको ८
सावधीअनसावधीकोविचाररारवनो जामें
नाथसमझेसोभगवदीयपुष्टिमार्गीयहेखा
सीमवियादीहेंतिनसेंरीतभांतिपूछलेनो ।
औरवैस्नवसामग्रीमेंऔरमहाप्रसादमेंवि
चाररारवे सामग्रीमेंश्रीठाकुरजीकीसत्ता

सिद्धा ३९

जाने महाप्रसादमैं वैस्नवप्रभ्रकिजहिनजा
निअपुनीसताजानें सामग्रीकीसेवापवित्र
होइकेंवासाजलसेंहाथधोयकेंविवेकवि
चारसहितपरसकरे पाछेंप्रसादीकवैस्न
वहैंतिनकेहाथसें धसामग्रीदिवावनी टे
हलकरावनी जहांताईंबनेतहांताईं सिद्धसा
मग्रीकोकार्यआपुहीकरे औरसाकादिक
जोसामग्रीवजारतेंजोमंगावनीहोयसोनां
मधारीवैस्नवविनाऔरकाहूसोंनमंगाव
नी औरजहांताईंबनिआइतहांताईं श्रीठाकु
रजीकीछोटीमोटीसेवासगरीअपुनेहाथसों
करे जोकुटंबमेंजाकीअत्यंतप्रीतहोइतासों
करावे आपुहीपवित्ररहे पवित्रकार्यकरे
रसोईनीजेंपानिकेंसमधरावे राजभोगआवे
जबरसोईकेपात्रादिकमांजिकेंसमधकरिकेंध
रे सखड़ीमेंबड़ीछूतमानेपीछेंपकापकछू

यतनजाय अपवित्रतेंवहकिहीनताहोतहैं
तातेमलिनतासोंनरहनो बहुतमेलेवस्त्र
तोहीनावने काहेतेंवैस्नवकेपासबैसव।
वैठे तबभगवदवार्ताचरचाकरे तहांस
वेयामसुखपावतहें तिनकोंवासआवे भ
गवद[illegible]मंदिरमेंदरसनअर्थजातोपरे
तहांप्रभुकोंबासआवे यहभावजानिकेंव
स्त्रउजलराखे फटेमोटेकीचिंतानाही जैसा
बनेतैसोपेहिरे परंतबहुतमेलेनराखे।
अपुनीदेहकेअर्थकाहूकेदिवायवेकेअर्थ
थोडोकपरानाहीपहरे अपुनेप्रभुकोंवह
पराबे तातेंमोटोपहरे यहदासकोधर्महे
औरसूकर स्वान सियार धोबी गर्दभ नी
चजातिचांडाल चमार भंगी आसुरी स्त्री
की रजस्वला छापकी सर्प इत्यादिकछु
वेतोतत्कालन्हायडारे ऐवस्त्रकेपरसतें प-

सिद्धा
३१

ककालकोहूयो हमारेकालनाईहेतोसो
गनोदोषवहे दिनकोकुयादिनमेंनहाय
रात्रिकोकुयारात्रिमेंनहाय यहवेदस्मृति
धर्मशास्त्रमेंकहोहै महाप्रसादरूउत्तम
ठौरकोलेर याप्रकारआचारविचारसूधा
रहे याप्रकारपुष्टिमार्गकीरीतहोइतौन
सोपुछलेर ओरउत्सवआदिकोलोपनकरै
उत्सवकेआगममें श्रीठाकुरजीकोपरम
आनंदहोतहै जोफलतोउत्सवआवेहै।
जोउत्सवनकरिपेतोश्रीठाकुरजीकोमन
अप्रसन्नहोयजाय तातेंउत्सवयथाशक्ति
सर्वथाकरनो प्रीतिपूर्वककरै मनमें
दुःखपायकेंनकरै काहूकेआगेअपुनीब
ड़ाईनकरै जोमेंपसोउत्सवकियो लौकि
कवैदिककोईबडोकार्यआयपरैतोरूउत्सव
कोंटारेनाही अपनेंअटकावपरैतोवैत्सव।

केचरनयाश्रप्रभुनेहरवैस्नवयासकरावे लौ
किककार्यकेश्रर्थश्रलौकिकश्रीठाकुरजी
कोउत्सवनकरेतोश्रीठाकुरजीवाकेउप
रवऊतहीश्रप्रसन्नहोय तातेंश्रलौकिक-
का[illegible]र्यमेंमनऊंराखे लौकिककार्यवै-
दिककार्यश्रावश्यहोयसोकरे पुत्रादिक-
कोव्याहकरेनहोतोंरेहृथमर्यादावैस्नवहो
य तिनकेघरपुष्टिमार्गीनमेंमहाप्रसाद
लेय पुष्टिमार्गीननहोय श्रन्यमार्गीय-
होयतोवाकेघरनलेई लौकिकवैदिकका
र्य[illegible]करनोहोय तामेंप्रथमश्रीठाकुरजी
कोंवस्त्रसामग्रीकरे पाछेलौकिकवैदिक
करे लौकिकमेंज्ञानजीवावनीहोयतो प्र
थमवैस्नवकोंमेंदरसामग्रीकरिश्रीठाकु
रजीकोंभोगधरिकेलेवावे श्रीजीकीउ
हकीभेटयथासक्तकरे श्राद्धादिकमेंवे

शिक्षा
३८

सबकोंनांहीमदाजाकेघरवैसबमहाप्रसा
दलेतहैं ताभावलिवावेआइकेभावतेन।
लिवावे लौकिककेभावमेंब्राह्मणाऔरज्ञा
तकेकरे अलौकिककार्यमेंवेसबकोंक
रे तातेऔरकेकरेकोप्रयोजननांही लौकि
कमेंकोऊज्ञातकोडरोमानेंतोउनरूकोंप्रसा
दआदिदेकेसंतुष्टकरेअपनेमार्गकीनिंदान
करावे काहेतेंदृढभक्तिभईनांहीहैताते नि
दातेमनकोंदुःखहोय दृढभक्तिवारोहै ता
कोंकछूलौकिकवैदिककोभयनांही वाकों
तोएकअलौकिकसोंकार्यहै याप्रकारसोंर
हनोजहांतांईदृढभक्तिनांहीहै तांहातांईयह
जानेजोमेरीभक्तिमेंकोईप्रतिबंधनकरे याते
लौकिकवैदिककरे जामेंश्रीठाकुरजीकीसे
वानिर्विघ्नतासोंबनेसोकरे पाछेमनकोंए
देहापेसोनकरे पुष्टिमार्गीयभगवदीयसों

कछुवातनकौंचेनरायनरावे कपटछलभ
गवदियसौंनकरे लौकिकवैदिककार्यउ
हिमार्गकेकार्यतेहीनजाने यहउहिमार्गकी
रीतसवोंपरहे औरजितइंद्रियहोर विषय
आदिनेंश्रीठाकुरजीकोआवेसजाननरहें ।
विषयाक्रांतदेहानोंनावेशोसर्वदाहरिः याप्र
कारश्रीआचार्यजीकहेहैं वेसवकोधर्मबऊ
तकठिनहे वैस्नवकोसर्वओरतेंविवेकवि
चारकेंकार्यकरनो ओरसमर्थाउहोरतिन
हीतेंलौकिकवैदिककोकार्यकरनो उरेके
निकटनजानो वासोंसंभाषनहूनांहीकरनो
देसकालसमयअउनोसामर्थ्यविचारकेंका
र्यकरे याप्रकाररहेतोसहावेसोंभगवदसेवा
वनेउनमतेंउत्तमदेसब्रजभूमिजाननो त
हांपूरणपुरुषोत्तमकीनित्यलीलाअस्थित
जाननों रात्रिकेसेनकरनो तवप्रातःकाल

सिवा
३५

कीसेवादर्शनकोस्मरणकरि श्रीआचार्यजी
श्रीगुसांईजीकेकीर्तनगानकरिसोवे जोकी
र्तननआवतहोयतोश्रीआचार्यजीश्रीगुसांई
जीअपनेगुरुकोनामलेकेसोवनो सोवतेस
मयकोनामसगरेदिनकोदोषखोयबेवारोहै
सोसबसावरूपकेजाय जेसेंरात्रिकोहृयफल
सगरेदिनकोप्रसादउपवनगणकरे ओरसो
वतेसमैचरणांमृतसर्वथालेउकेसोवतोवा
कोदुःस्वप्नआवे ओरनिद्राम्रतकवरावर
हेतासआईअपयवानआई तातेंचरणांमृत
कोसेवप्रभावमेंबन्योरहे तोसर्वथाउरानि
केंनपावें याप्रकारसोंवेसबयाकालमें
सावधानहोयकेंचलेतोबचे याभांतिश्रीगो
कुलनाथजीकल्याणभटप्रतिवैष्णवको
उपदेसकीय प्रसंगतेईसमो २३ ॥ ॥
अवचोरहूश्रीगोकुलनाथजीकल्याणभ

टग्रतिवैस्नवकेलक्षणकहतहैं वैस्नवकों
यहभयराखवेंनो जोमेरीभगवदसेवादमें
अंतरायनहोइ यहभयराखवेनोंसेवाकेअर्थ
लौकिककछुदेवी नथ्यापरोसीनयाराजात
थ्यादेसकालसगरोदुःखसहिरहनो जाने
जोयहदुःखहेसोदेहसंबंधीकोइकछुकहा
करैगो औरभगवदसेवामोंकेकहाहै दुःख
सुखनोसर्गनर्कजगतमेंजहांजायगोतहां
हीयाकोंसिद्धिहै परंतभगवदसेवापरम
दुर्लभहै जबअनंतकृपाप्रभुअपुनोंजानि
केंकरे तबभगवदसेवाकोसंजोगबनें औ
रअपनेमनमेंयहजानेजोजहांनोंईयहदेह
हेतहांनोंईयहदुःखहेकछुलौकिकदुःख
सुखभयेसेंगनहीहै तातेंसुखपाइकेसहे
भगवदसेवायहमेरे जन्ममेंदुःखभयोतो
कहापरंतुभगवदसेवानोबनतहै लौकि

कट्यादिककेलियेंदेसपरदेसमैंकीतनोंइः
सिद्धा ५ रवजीवसहतहै सोतोतुछपदार्थहै यह
महाअलौकिकभगवद्सेवानाकेअर्थभ
गवद्सेवामेंलगायदेइ औरश्रीठाकुर
जीकोसामग्रीमेंनेगबांधे सोनेगमेंरचक
हूघटैसोनकरै औरअधिकवनैसोकरै
परंतुनेगमेंघटतीनकरै औरअपुनोसाम
र्थ्यदेखकेनेगबांधे पाछेनकरैतोप्रभुनेग
विनाश्रमपावे यहभक्तिमार्गमेंप्रभुनेगा
कीआसाकरतहै सोलौकिकदृष्टांततेजा
नो जैसेंकोईवैस्नवकोनित्यमहाप्रसाद
लिवावै एकदिनघटतीपरै तोउहभलो
रहै नाभावविचारिनेगबांधेपीछेंघटतीनो
हीपरनी औरजोवैस्नवजासेवामेंचतुरहो
२ यतोनसोंसोईसेवाकरावनी काहूसोंसाम
ग्रीअधिकवनहोइ कोईमालासुंदरकरि
ने

79

जानतहोइ कोईबीजआछेबोधजोननतहोय
कोईसुगंधअतरफूलेलअरगजाकीरीतजा
ने तिनसोंसोईसेवासिखकरावे काहूको
फूलहटीपागमुकटवागावस्त्रमेंचतुरहोइ
तिनसोंसोईसेवाकरावे याप्रकारसोंमीन
सर्वकभगवदसेवाकरे जाकोगुणवहुत
होइ औरमीननरावितासोंकछुनकरावे
यातेगुणहोयमीनवहुतकरेतासोंसीखिक
रावे अपुनकोकछुगुणआवतहोइतोवे
सवश्रद्धापूर्वकपूछेतोकहे आपुतेंदोरदो
रकेकहतनफिरे जोअपुनेअपनेगुणकोअ
भिमाननकरेतोमीनसर्वकेवेसवकोवता
वेतो अपुनेतेनपावेसवहोयताकोंआछो
नजाने औरजोअपुनतेप्रथमवैसभयोहो
यताकोंकानिरावे जानेजोरहवडभागीहै
मोतेंवडेहैंप्रभुनेइनकोवालपनेमेंअंगीका

सिद्धा
९१

रकीयोहे भगवद्धर्ममेंबडेछोटोनजातेंकृ
पादेविकारूकोंस्मरनेंआवनहीआदस्याहो
१ कारूकोजन्मबिनजाय परंतुकछून
समझे यहपुष्टिमार्गमेंबडेछोटेकोधर्मा
नतोही यहमार्गमेंकृपाहीकोविचारहे
पुष्टिमार्गमेंस्मरनेंआपतिनकोअपनेंसज्ञा
तिजानें स्मरणबिनाविजातिजानें उनसें
अपनेंअपनेंधर्मगोप्यराखे औरजोजीव
त्पुष्टिमार्गमेंअंगीकारकरिहे ताहीको
समर्पेसोईप्रसादलेयनतरहेज लसूनगाजर
सोइत्यादिकमहाकनिष्टहेवेदमेंवर्जितहे
ताकोकबहूनलेइ औरसास्त्रमेंवेराग्यरूनि
स्थितिकहेहे परंतुपुष्टमार्गमेंलीनोहे ता
नेंस्वेवनभोगधरेंप्रसादलेइ लोनउजासोस
कावीरयहसास्त्रमेंसवेंकहिहे सोयहपु॰
ष्टिमार्गमेंअनसखरीहे ताकोअनसखरी

श्री

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ५
81

कीरीतसौंकरनो अग्निनेंउनारेपाछेंसाका
दिकमेंलोनहारनो थारोबनेसोउद्दीमारी
कीरीतश्राछीवडनवडीहैश्राछीदीसे श्रो
रमारगकीक्रीयासोयाकोकछूफलसिद्दि
नांही सोगीतामेंकहेहे स्वधर्ममपिस्वल्पो
यंपरधर्मेभभयात् परायोधर्मभयकोउप
जावेवामेंकछूकार्यनहोय श्रपनेउहिमा
रीमेंरीतप्रमानथारोकरे श्रीश्राचार्यजी।
कोश्राश्रयकरेनोऊहधर्मतेप्रभुप्रसन्नहो
२ श्रपनेमनमेंउत्साहसेंबनेसोकरिये लो
कप्रतिष्टाअर्थजोवस्तहेताकोप्रभुअंगीका
रनकरे जदिपबडेश्रीश्राचार्यजीमहाप्रभु
जीकीकानतेंकरे नउवामेंश्रीश्राचार्यजी
श्रीठाकरजीप्रसन्ननहोय जवश्रपनेप्र
भुप्रसन्ननभए नवयाकोकीयोकहा ना
तेंप्रभुकोएकसनेहकीश्रपेक्षाहे श्रीठाऊ

सिता
४२

रजीकोंकोईबातनकीघटतीनाहीहेकेवल
वैस्नवकोंजेसोभावहोयतेसोईप्रभुअंगी
कारकरैंतातेसोईदानकरै तातेवैस्नवअ
पुनीच्योपनाछोडिमहाप्रभुजीकेचरणा
रविंदकोआश्रयकरै लौकिकबानलोक
नमेंचेष्टादिखायअपनोधर्मगोप्यकरिरा
खे जहांलौकिकव्योहारबनिजकरिये
तामेंजोभगवदइछातेंभामहोर तामेंश्री
जीकोअंससमयमकाढीये सोदोफेली
न्यारीकरिधरनजैये जोगावमेंकोईवैस्न
वकेपासभेटजमोहोतनहोय तोअपनेघर
भेटकोद्रव्यकबहूनराखीये कहांजानि
येकोईसमयकेसोद्रव्यकीकठीनआवे ।
तबधर्ममेंछीनमेंछूटीजाय द्रव्यदेसोकोई
समयभगवदधर्मकोनासकरनाहे जोगा
ममेंकोईप्रमानिकवैस्नवनहोयतोजब

भेटियाश्रीजीकेआवें तबतत्कालभेटक
रिदेय यहविचारेजोमेंहीजाऊंगोतबले॰
जाऊंगो औरेगाममेंगएहोयतोभेटका
ढीकेंतत्कालकरिआवे औरगाममेंहोयतो
ऊंडीकरिपठावे काईभलोवैसवहोयतो
केहाथपठावे काहेतेंयाकलियुगमेंद्रव्य
कोआरपरस्त्रीकोयेयमकेनासिकहें श्री
भागवतमेंकहेहेंतो काहूकीस्तरीको
संगनकरे चित्रलिखीस्तरीकेदेखेतें
विकारमनमेंहोइ तातेंपराईस्त्रीकोअरु
तोकालरूपकरिकेंजानें औरश्रीगोवर्द्ध
नधरकेअपनेगुरुकेसानोंस्वरूपकेदर्शन
मेंसदाआरतराखे यहजानेंजोमेंदोय
चारबेरदसबेरकेआयोहूं ज्योंज्योंदर्शन
करेत्योंत्योंअधिकतापकरे तबजानोंजो
दर्शनकोफलप्रभुकृपाकरिकेंदीनो या

भांतिसदाश्रीयमुनापानकरिवेमेंतत्परराखे
औरश्रीवर्द्धनधरकेसेवककेटहलुवा सातमं
दिरकेसेवककेटहलुवाव्रजमेंजेरहतहैंतिनको
दोसककबहूमनमेंनल्यावे काहेतेंशास्त्रमें
कहेहैंजो यहजगतश्रीठाकुरजीकोक्रीडा
भाइहै सगरोजगतकाठकीपूतरीहै प्रभु
नचावेवारेहै तुपिप्रेरककरूसमयपादपद्म
प्रसीदतु जाकोंजेसीबुद्धिप्रेरतहैं सोतेसें
हीचलतहैं तातेंजीवकाहूकोदोषनदेखे
याहीवातहोइतोसमझकावेनमानेतोभग
वदइछाजानेदोषकाहीनराखे याप्रकारस
गरोजगतकोंदेखे ताहूमेंश्रीजीसंबंधीव्रज
संबंधीतोयेप्रभुकेहैं प्रभुकेविचारविना
प्रभुकेगांवमेंपासकेसेरहैं तातेंउनकोंअलौ
किककरिकेंजानें उनकीसेवाटहलबनेसो
करे आपुपसेउनमस्थलमेंअपराधतेंडरपे

तरहे काहेतेंओरठोरकोपापउत्तमठोरकेपाप
तेंछूटे उत्तमठोरकोपापवज्रलेपहोयसोक
सेछूटे तातेंअपराधकोंडरराखे कोपउत्तमस्थ
लमेंजीवहेंतिनकीलौकिकखोटीबानकरे ।
तिनकोअशुद्धकानतेंसुननिहीनांही तबभा
वदृढहोयप्रभुमेंप्रसन्नहोय श्रीभागवतकेप
कदोयअध्यायजिननेवनेंतिनतेंपाठकरें मार
गकेग्रंथपाठकरे औरपतनमार्गीयग्रंथदी
काश्रवणविनाप्रभुमेंमनलागेनांही काहे
तेंग्रंथविनापुष्टिमार्गकेसिद्धांतकोंजानेनांही
वैष्णवकेमुखतेंसुनेतबश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुजीकोश्रीगुसांईजीमहाप्रभुजीकोपुष्टि
मार्गकीक्रियासेवासबकोंअलौकिकज्ञानहो
य तबमीनवहे जहांमीतरूपजी तहांयाकोका
र्यसिद्धिभयो श्रीसुबोधिनीजीश्रीवल्लभकुल
वोचेतयाकोईनिवेदनीकेमुखतेंसुनेलीला १

सिता
५४

कोभावसुनिकेंयपुनिकेंअपुनेहृदयमेंस्थपा
वे काहेतेंभगवदमहात्म्यकेज्ञानविनाथित
नहोइ सोज्ञानश्रवणविनानहोइ तातेंभगव
द्वार्ताकोश्रवणआवश्यकेलियेंकहे ता
हीतेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभूजीनेनवरत्नमें
कहेनो हमनिवेदनदियेहें परंतुभगवदी
[illegible]यकेसंगश्रवणमननभपविनायाकोज्ञा न
ननहोयसो जहांतांईज्ञाननहोइ तहांतांई
प्रीतनहोइ जहांतांईप्रीतनहोइतहांतांईप्र
भु[illegible]पसन्ननहोय जैसेंजगतमेंद्रव्यकोज्ञा
नहें तातेंद्रव्यमेंप्रीतहे काहेतेंद्रव्यकेगुन
कोज्ञानहे जोसबकार्यसंसारमेंयातेंहे ते
सेंप्रभुकेगुणसुनेतेंप्रभुकोज्ञानहोय सर्वोप
रिजानिप्रितलगेतोसर्वकार्यअलौकिकसिद्धि
होइ औरपतनमार्गीयअष्टछापके कीर्तन
गायवेमेंसुनवेमेंप्रीतरावे काहेतेंपुष्टिलीला

केकीर्तनजगामेंअसकलानेंहूँसमगटहोत
है तिनकेहै तातेंयहजानेजोअसमार्गीय
केकिर्तनमेंअपुनेश्रीजीकीलीलाकेनाहींहैं
यहजानिकेंपतमार्गीयकेमुखतेंतोंहीसुने
जैसेंयमुनाजलओरकेपात्रमेंहोयसोउहि
मार्गीयकेसेपीवे जोपीवेतोभ्रष्टजानिये ते
सेंहीअष्टछापकेकीर्तनवैस्नवकेमुखतेंसुने
श्रीठाकुरजीकेदर्शनकरिवेलायकदंडवत
करे श्रीठाकुरजीकोंपीठनकरे श्रीठाकुर
जीकेदरसनकरिसेवाकरिबाहरनिकसेंत
वपीठपरेसोबाहरनिकसीदंडवतकरिके।
औरठोरजाय तवअपराधनिवारनहोय औ
रश्रीठाकुरजीकेसन्मुखदंडवतकरे वामद न
ताणरूदंडवतकरे परंतश्रीठाकुरजीकेपीठ
पीछेदंडवतनकरे तहांबैठेनांही कांहेतेंश्री
ठाकुरजीकेपीठमेंबहिर्मुखताहैसोया।कोहो

सिता
४५

४४

य सोदासोदरलीलाकेप्रसंगमेंश्रीआचार्य
जीलिखेहैं जसोदाजीश्रीठाकुरजीकोंपकर
नकोंआई तवश्रीठाकुरजीभाजेसोःज्योंज्यों
श्रीठाकुरजीकीपीठदेखेंत्योंत्योंखेदबहुतत
वसनेहहूसोंबांधे तातेंसन्मुखप्रभुकेरहे
औरप्रभुनेउरुकोस्वरूपहृदयमेंलायकेंदंड
वतकरें विज्ञप्तकरें महाराजमेंसंसारस
मुद्रमेंडूबतहौं तातेंआपबाहपकरकेकाढो
तोनिकस्योजाय मेरोसामर्थनिकसवेकोनां
हिंहै मेंआपकीशरणाहोंसेवाचोरहों सा
धनकरिकेहीनहों आपकीशरनविनामेरे
औरकछूठीकानोआश्रयनांहीहै सोसावि
विपतितनअधमकेउधारकरिवेमेंएकआप
हीसामर्थहो आपकीकृपाहोयगीतोप्रभुप्र
सन्नहोयगे श्रीठाकुरजीआपनेचरनमेंहें ति
नमेंप्रभुभावगुरुभावदोऊराखे सातारविंद

89

रूपश्रीआचार्यजीहैंयाभावतें यदपुष्टिमार
गमेंभावहीमुख्यहे एकदेहसंबंधएकभाव
संबंध देहसंबंधअपुनीवेटी भावसंबंध
अपुनीवहू वेटीअपुनीदेहतेंप्रगटीहे प
रंतुपरायघरजायपालीपोषीहे तोऊघर
कीनाही औरवहूहेसोकाहूनेपालीकाहू
नेपोषीकाहूकीवेटी सोभावसंबंधतेंवहू
घरमेंआयमालकभई काहेतेंतहांभावसं
बंधहेसोदृढहे जेसेंदेहसंबंधीजादवनिनको
त्यागभयो भावसंबंधीव्रजभक्तकोंआपनयो
दीयो तेसेंहीश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीपुष्टि
मार्गप्रगटकरि ब्रह्मसंबंधकरायभावसंबंध
दृढकरिदीयेऐसोदानदयोहैं परंतुपतिव्र
ताधर्ममेंचलेतोपतिप्रसन्नहोय तेसेंहीवैस
वसावधानपुरुषोत्तमकोंअपुनेपतिजानिईन
दीकीसेवास्मरणमेंतनमनधनसमर्पनक

रे तोप्रभुप्रसन्नहोइजायया प्रकार कृपाकरि
कैं श्रीगोकुलनाथजी कल्याणभटसों कहे
पाछेयह आज्ञादीयय हपुष्टिमार्गको सिद्धां
तकाहूकेआगेंमतिकहियो केवलअन
न्यभगवदीयहोइ तिनसोंकहियो ॥
प्रसंगचोईसमोसंपूर्णम् २४ इतिश्रीगोकु
लनाथजीचोईससिद्धापत्रसंपूर्णम् ॥ ॥

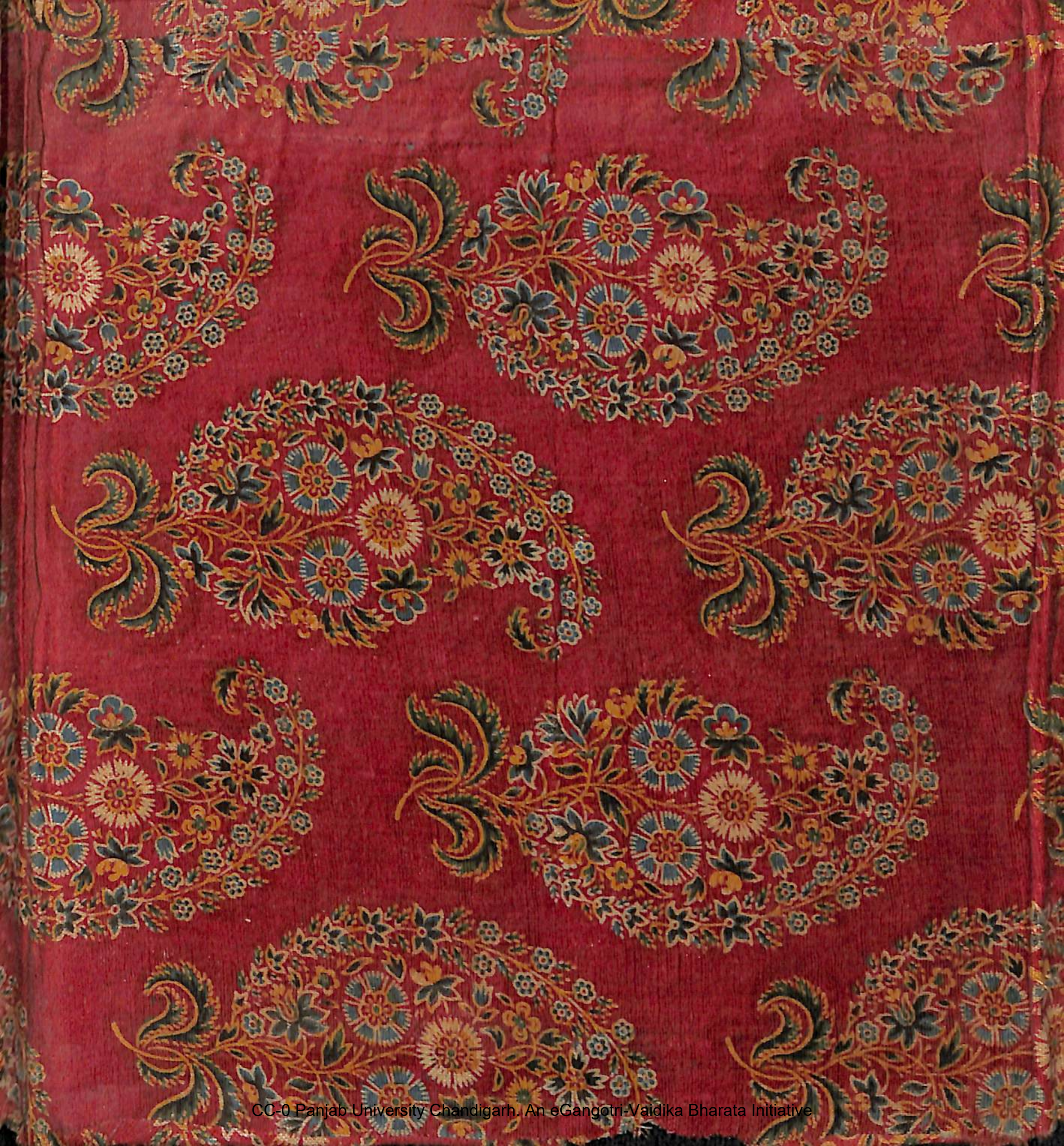
ह. ग्रं
132

32

156

श्री गोकुलनाथ के वचनामृत

132



१ अनाथ पलनरके
२ दु घारखनी
३ सादा वस्त्र संभरके
४ क्रोध नां करने
५ दुष्ट मनगंवान
को आ प्रपराधवे
६ हे वामेपां संत
नकूरने
७ काहू के अपराध
देखनो ना ही
८ पै भवसांचो हो
९ निंदा दुर वचन
सहने
१० सेवा काहू के भरो
सोन करने
११ जीव की रक्षा करे
१२ आपने सेवक रूपके
साधात पूर एग
रूपो तम जानने
१३ विरोध न करने
१४ दे ... जान ... जाने

१५ लौकिक की मीरता
नाकरनी
१६ प्रदेसजाय तेहा पु
ष्टि मार्गीय श्री ठाकु
जी विराजित होय तत्र
स्रापचर कर जीव
१७ पुष्टि मार्ग सर्वे
पर जाने त्यधिक
१८ अमनार गी पावहि
र पुरुष पुष्टि मार्ग
की निंदा वल मेक
ले कीनिंदा वैष्णव
की निंदा भगवतनि
दा पुष्टि मार्गीय
निनिदा र सेदुख
पामनाजय
१९ पुष्टि मार्गीय वैष्ण
व भगवदीय के
पास जाय वे तो वा
के संसय दूर
करि पुष्टि मार्गीय
जातें व [illegible]

[illegible]

२१ दैमताकैनी
२२ मिथ्या भोषननक
इनो
२३ सत्वगो ज्ञानस
स्यगो कोविनाउग
क्षिनो
२४ भगवद् संक
द भैंस्तनउनके
प

द्वयजन्मसंवमस
स्त्रमंकांचतृष्टह्मम
ह्लादंभचर्मेयुतांध
नधांन्यद्विहिन्यविता
शकरारविसङृशनि
ष्टुश्चैभूमसृता